

DPN 5817

Title : वैद्य सिद्धि सार
अनुभूत चिकित्सा प्रदिप
VAIDYA SIDDHI SĀRA
ANUBHŪTA CĪKITSĀ PRADĪPA

Run. No. 6508

Cat. No.

Micro. No.

Subject चिकित्सा Medicine

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. /

Size in cms. 25 x 8.5

Folios 78 Lines (in a page) 7

(मांसिक 43-50)

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

हरिहरानन्द वैद्य

Date: NS / SS / VS / KS 753

Ruler / place

Harīharānanda Vaidya

Script : New. / Dev. / Bhuja. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thiyasaphu / yellow

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

↓
३^० तमः श्लोकः ॥ ॥ ध्यात्वा दिवं यम तच्छ विना वैद्यं चिकित्सामिव फलं दां शङ्कतां
गोदां श॥ धन्वन्तरी मुनिना मुनि सुश्रुतादिना त्रेयम् तु तपसा

शिला प्राम् ॥१॥

समाप्त / Colophon

वाजीकण ॥ ॥ विष. वाजीकणार्थिकाएष

स्वमवा ॥

इं दीर्घक / Some of content titles

चक्षु गेगाधिका ;

कुदरेगाधिका

त्रिभिर्धिका

॥ सिका ६२३ मद्र पद द्रुक् ३

0

5

0 ctns

5

10

15

20

25



वैद्यसिद्धि सार

८५ पत्रा

१४

३५०

८५

११५०

आखिरी

सम्मत १६८८ (११) लमा नने के

सम्मत १६८८

३०९

२०३४

१६८८

३४५

वैद्यसिद्धि सार

अनुभूत चिकित्सा प्रदिप

वेनाद शंखं बाधिनय आवा नु क न न व थ वा क न म र व क न म र व थ ॥
वृन्द भाव व र वि वि सा ग प न १ प न

राडी

१५
१०
॥ नमः शिवाय ॥ ॥ ध्यात्वा शिवं यत्र मयत्नं विचित्रं वदं चक्षुः मरुत्तु रुतदां
जगत्संगलमैशो धनं न नीमनिवर्गं मनिमं शुभादीनां यमगुणयमाजिनर्म
पुलम्य ॥ १ ॥ यस्तु नागविभषरुः सर्वरुष सुकाविदः दंजकालविशेषरुसस्य
सिद्धिर्नर्जयः ॥ २ ॥ अन्वीमातुलंगमा कंजवर्मा सुमेधवी धात्री दाक्षाजिना
नाम्ना कल्कमाश्रय न धानयत् ॥ यत्रिमका न्यदहाश्रय संहाम धनानिवादि
वास्वपुत्रा वायव्ये वायामं जिजिनहन ॥ कौधपुत्रा रक्षा निवर्तुथ रुनहाद १
॥ ॥ मस्य पर्वट कौजीवचन्द्र नादी यनागनेः शृणु जीर्णं तुलं दद्यात्पिपासा द्वा ॥

॥ (मुसकोदिता) ॥ चन्द पत्र २ १ ६
महुगा

॥ सत्तापि यूगी ॥

५
॥ नमः कथं ॥ नलाय पर्वट धात्मा कंचनं मध्वकं जिना ॥ जीताम्यया यथपीतं वागपिरुकरु
॥ ॥ चंदनं यर्वट धानं गुडु व्यामलकानि च ॥ उजीर्णं मस्य सयकं शृणु जीर्णं सितायूरी
मध्वकं पिबत्यानः सर्वद्व प्रसिवावर्ण ॥ सर्वद्व न ॥ ॥ ॥ शिविवापियली दाक्षाजिन
यव्या रुनहृति ॥ अमृतां शुभपी दाक्षा वात्सलकं समन्विता ॥ नास्त्रामध्वकं मृद्वी का काश्म ॥
नीशमलीवला ॥ कृत्तकया यमगुडं श्रु काट्टं चैरु नायदं ॥ लंबगंधान्यकं कुष्ठं मजाजी
समचूर्तयेत् ॥ उक्तादकं नयागवां वागद्व नरु नयनं ॥ गाली सचिषक कटु पयवर्जं
नापि व्याल्यमूलय निराग युगाद्व कर्ष ॥ चक्कणं कंजनं नृतिहय माषजाजी गचूर्तयेत्

लगु उभावितसपिहोदं ॥ कर्षोर्द्धं रुद्रयति वागद्व नाग्निमाश्यासर्वानिलान्क
 कृकृणपविगायतस्या ॥ **वागद्वन** ॥ ॥ यिष्ठीवत्सकवीजानिचूर्ष्टुमश्रुम्वनापि
 वेन। पिरुद्रनः पुसाम्यर्थवमनंयवभाषधं ॥ ^{॥ विष्ठीवत्सकवीजानिचूर्ष्टुमश्रुम्वनापि} विष्ठीवकादायमानाम्स्फ
 केवागजर्कना। उरुत्यानकजीनकेसिद्धं यिरुद्रनायहं ॥ ^{॥ चन्द्रनमधर्क} चन्द्रनमधर्का
 जीनमस्फनागववसकं। याअयर्षटकादीचाममृभात्यलज्मनिवा। यिरुद्र
 करुमदध्वं दवापीसानरागसः ॥ ज्मनिवायवपकाजीनमधर्कचन्द्रनद्वयका २
 स्मनीमधर्कचतिज्मनिवादिनिर्यगना। नकयिरुद्रनिहं त्यासेरुष्पुवतिपमादि

नीपीवयिरुद्रनश्चुर्द्धिमहादरुविनासनी ॥ ज्मनिवादि ॥ ^{॥ विष्ठीवत्सकवीजानिचूर्ष्टुमश्रुम्वनापि} यिरुद्रलापिष्यलीवासामा
 धवीसमचूर्ष्टुर्द्धि। यधेनालरुयतिहं विष्मद्वनरुनामना ॥ ^{॥ विष्ठीवत्सकवीजानिचूर्ष्टुमश्रुम्वनापि} दाकामधककायष्टानसे
 रवियावेनं। ययसासदूर्ध्वपीवासरुद्रनान् ॥ **यिरुद्रन** ॥ ॥ ^{॥ विष्ठीवत्सकवीजानिचूर्ष्टुमश्रुम्वनापि} यिष्यलीनागर्जमस्फ
 चरुत्यासनद्वान्। करुद्रनेयदागवाजीनैयानकेमरुमी ॥ ^{॥ विष्ठीवत्सकवीजानिचूर्ष्टुमश्रुम्वनापि} रुग्मद्वनालरुद्रगीक
 द्रुलमधनासराकरुद्रनान्वीचुर्द्धिऊयर्कयिष्येगदं ॥ ^{॥ विष्ठीवत्सकवीजानिचूर्ष्टुमश्रुम्वनापि} खजलापिष्यलीवासी
 जर्कनादिगुनालनायाज्वन्कज्मजकाजध्रिसमध्वजान्चिपदा ॥ ^{॥ विष्ठीवत्सकवीजानिचूर्ष्टुमश्रुम्वनापि} मालीरुयगुर्कभला
 केज्मन्चवमादिकं। यर्वागिकमिदं नाम्नाश्च द्रुनिवानर्त्त ॥ यर्वागिलेह ॥ मालीम

वंजीजादावपिष्णलीमूलभवचामनिर्वनागकंडा। र्चनागत्रादुगुगन्धवालवंगपण्डु
 लाचूर्णकैवयागुठ। शलाघुरुद्धयादो। करुनिधमसास्वर्ण। मन्दातलसभाभति
 अजभागसुखेवच। विष्णुनचभोद्धचध्वनरुदमधपिवा। घ्रातकसुसनागनिः
 कदिरुनरुथेवच। नगचूर्णतिनीरुद्धमासाद्विवलवानरुवर्ण॥ **नानिस्थादि॥** ॥
अथ द्वा॥ ॥ विष्णुमृगावृद्धनिधुपरेमृतीसमन्त्रिणः। कर्णकषायरुन्नास्वात
 पिष्ठाद्वद्वर्ण॥ अत्रिवाद्यत्तलीगसिबलापदकभवच। कोष्मनीमधुर्कंदाकामधका ३
 निरुवृषकं। पर्यजीगकषाय। रावागपिरुद्धनायर्द। सप्रलापसर्पभाह समयसौलिक

हर्ण॥ रुलनियकतासामाशुहादाकाचचकथा। चिपुतलुलखधुचरुमनयव्यसंतिद
 व। वागपिरुद्ध। हासर्द्धिगमथी। गडचर्ण॥ कलालवंगपरुलानलाहृदयतालिक
 न। वागपिरुद्धनरुथी। आवेदनजनना॥ नलायतत्तथादाका। पुषधस्यदबालेरा॥
 दूचूर्णकृर्णवैवमधुनासहलरुथलावागपिरुद्धनरुनरुकनिष्ठीवननगथापाठ्ये
 लानचिहृषुलरुभेगस्यसंभय॥ **जृगीचचनुनीसागमनालीसकृष्णयासह। पि**
नकस्यरु। जीकवागपिरुद्धगदायर्द॥ वागपिरुद्धव॥ ॥ **द्वानुयथाटराग्याचुव**
वाधान्यककदुलेः। सारुयाविश्वरूपीः। कात्थाहिगुमधुलकनेः। करुवागद्वन

पीतादिकृष्णसंगलग्नान्। स्वसपुमदाग्ररुत्नादा नृमिवाजिति०॥ मूकपार्थक्यं
 तात्तीमेकजवनुगमसपिचादिकाजीश्रद्धादिसागधनसमतिचकर्षणुहृष्टा। अद्वाद्वासा
 गकनयस्कजवृत्तुष्टुगीदद्याद्विजागकयुगं विरुमाषकानां। ^{नानामयि}द्विद्वयुकमनिर्म
 नरिष्यग्युथागमगुथादसीमनिकरानिलरुनिहृष्टा॥ **वयोदसीग**॥ ^{नानामयि}जापीरुलाल
 केदुकगुथानांद्विजादियुकांसदुनालरुनां। वनांगिकद्वयोदयनचलीढापसानक
 नृयवागकरुद्वयेष॥ दान्कारुयाउत्थलशुद्धिमलावनांगिकं यणकपंचरा ४
 गी। शृंगीशजीविन्दुसेधस्कनालीसपिपलीचाईशिवाष्टरागपलायददाग

लगात् ॥ १ ॥ साचि न वा न करु द न ष ॥ ॥ वि ॥ श्व ला ति व नी ग म नि कृ षु च मा न्दिकी
द्रु वी । ली डानि वार य न्ता सु वा न ॥ १ ॥ वा न ॥ १ ॥ ना ग भ न्द य वा
म सु च न्द ना क द्वा रि सी । पि प्प ली चूर्तु र्म य क्क क वा य न्दु पि र्ध त्त न श । उ म मृ क्क नि
वि ष्क दि पि ल ॥ १ ॥ वा न ॥ १ ॥ गु डू ची ति न्द वा न्ता र्क म धे र्क च न्द ना चि न्द । ए षु दा
रु न् वि ष्क र्क स र्व द्वा र रु ना ग हा ॥ १ ॥ रु न्द ह य ल र्वा ग ला व ना ग चूर्तु र्म म ध । पि ल ॥ १ ॥ वा
रु ना र्क ना र्क र्क ग म दि पु ष ॥ १ ॥ वा सा धा दी क ल्म य थ ॥ क य सु । स दु ना ल सा । क र्क
जा डी ल र्क म नि ध स्क र्क म् । मा न्दिकी । ॥ १ ॥ गी स म सु चूर्तु नि पि ल ॥ १ ॥ वा नि र्द नि च ।

信

गुल्मविषमद्वयसंसर्गदोषगन्निष्ठः ॥ ॥ कटुहृयत्वचद्रुहाप्रचर्नतादित्यासं
 फणितलघनकैर्जलकैर्वाक्षौदलैर्हृत्पुनःपिचकरुपिर्लक्ष्मणकाशसम्पर्कः ॥ क
 टुहृयघनवासार्कजरीतादित्यगर्भः ॥ रुलपियसविटिगमागर्भतादिभिला ॥ हिमद
 लसहजीगचूर्णैर्दण्डनलैर्हृत्पुनःपिचकरुपिर्लक्ष्मणकाशविषमद्वयनासी ॥ **यित्त**
मद्वय ॥ ॥ वागोधिकैर्बुवद्गमिसन्निवागचिकित्सिग ॥ ॥ **वृहत्याद्यस्वर्नरा**
 श्रीगोलीश्रीगीदुनातरु ॥ वत्सकस्यचर्वीतानिघटीलकटुनाहिली ॥ वृहत्यादिग
 लः पाकैरन्निवागद्वयनायहृत्पुनःपिचकरुपिर्लक्ष्मणकाशविषमद्वयनासी ॥ **वृहत्या**

दि ॥ श्रीगोलीश्रीगीदुनातरु ॥ गुरुचीनागर्भयावकत्रार्णकटुनाहिली ॥ नृष
 शब्द ॥ दिक्कोवर्गमोनिवागद्वयनायहृत्पुनःपिचकरुपिर्लक्ष्मणकाशविषमद्वयनासी ॥ **शब्द**
 वागोलीश्रीगीदुनातरु ॥ ॥ **यित्त** ॥ ॥ **वृहत्याद्यस्वर्नरा**
 कननयार्जजनकृष्ण ॥ चांगनीस्वर्नसर्ववकर्मनसहयाजयन् ॥ मिखासर्वज्यसन्निवागया
 र्जजन ॥ ॥ **स्यामासकृष्ण** ॥ स्यलज्जाविवाचद्रुहासुचिष्टामधैर्कैर्गुडुची ॥ योहानकास्मर्य
 कषाययुक्तैर्बुवद्गमिसन्निवागचिकित्सिग ॥ ॥ **स्यामादि** ॥ नलायजत्वचोशीनवासाकृष्णपला
 ह्मकी ॥ जिगामधैर्कैर्बुवद्गमिसन्निवागचिकित्सिग ॥ ॥ **स्यामादि** ॥ नलायजत्वचोशीनवासाकृष्णपला

काशासकनीहिकाकृदिमूर्च्छामिदरुमात्रकनिस्तीवर्नहृष्यायाज्यडूलमर्वाचकाहृष्या
हाद्यवाताश्चश्चरुदकतकयागुठिकागर्पतीवृष्यात्रकापिद्वचनाजयग॥**चलादिगुठिका**॥
॥ उजीनंधात्तकंसुसंभनिवावालयपपठं। मधुकंचरुनंपदंलोधकप्यनवास
कंजेष्टनंतयलयासस्यामाकेजनं। समसुबुल्यनारागंसर्कजामधुनालिहत्
॥ यत्नापुनममूर्च्छाचिच्छिदिहिकाहृष्यापहं। पिशारुर्नमन्निवाधरिणंसायदेव
बुच॥**उजीनादि**॥ ॥ सागनाहीमनीलांगहिमडासालगीसूग। हस्तीरुलत्वथीवाना
त्रोचनीहृष्टनीनथा॥ मान्सीकिंजल्कभायानीमुक्तानीसमरागिक॥ जर्कजाम

मचूहृनिमधूनासहलरुथग॥ मन्निवाधरिदाथचनकयिरुनिसूदनं॥
यत्नापकमधुभाहाश्चच्छिदिमूर्च्छाविनासतं॥**चरुदृष्टीगलवंगमदि**॥ ॥ ॥
कस्याधिकेवकासिमन्निवाधरिसेतं॥ ॥ ज्ञानेवाववातिम्वयठालास
ववत्सर्क॥ साविष्ठागिनिवासुध्वीरुलासमदेष्टनालरा॥ रुदमूकवला
याधमधेकंरुदभीहिही॥ नषकदराः समयेद्वनामापुगिदावज॥ जागु
संभादसाध्यातगुनूर्त्वापिकर्षिणं॥**आनयव्यादि**॥ ॥ आदकश्चनसाध
नंभेध्वकदुकत्रयी॥ आकल्लेखनयदासातिष्ठीधचपुनःपुनः॥ विनास

15

10

८१

पियली कदु के शुष्ठी का नवी चदु नाल राः॥ कदु लंघस्क नष्टु डी समरागम निचूर्तु
 यन॥ सन्निपात निदाधन का ज्ञास्यम गल गुरु॥ कदु भाला व हिका चमधू तादा
 दशो गिक॥ **दादशम** ॥ ॥ कदु लंघस्क नष्टु डी व्यापन ना वका नवी॥ मसुता
 तीस चक्कण सुक्ष्म लागज के जने नगानिः ॥ कदु चूर्तु निमधू नाल लय दिषक॥
 निदाधन मन्निपात पुया सर्व ह वै सिङ्गुलिन॥ ॥ **दादशम** ॥ ॥ लवङ्ग निरु
 वा नली॥ चतुर्दशो गमिदं थार्गवा नृत्त पुय ज्यार्ग॥ **चतुर्दशम** ॥ ॥ लवङ्ग निरु
 लायी व नास्त्राङ्गुल मधस्क न॥ त्वक् की नागु न कर्पू न कदु मला विजाग क॥ मृग

नारिकि नाती च चन्दनं नागक जने॥ समचूर्तु मिदं लहं जर्क नामधू सपिषा॥ पि
 क्षास्यस्य सका जमीनि चूर्तु दिक्काम नोचकं॥ ज्यसमा न विषात्मा दगुरु ती जिन जूल
 नृग॥ **कतेष्ट ल अवेदि** ॥ ॥ मधूकमा न सिन्धे न ववापन कलम समा॥ ॥ **दादशम**
 मसुता न स्यां कुर्यात्सं ग्या प्रवाधनी॥ **मधूकमा न नम** ॥ ॥ सन्निपात समुत्पत्त क्रियामा
 यधका नय गापथमं द्वादशम न द्वितीय ष चतुर्दश॥ ॥ **चतुर्दशम** ॥ ॥ तीय चतुर्विंश
 मधूकमा न क॥ नगदं द्यायवा नो कं ह निश्चिदं नथ जिना॥ ॥ **वागल्ल** ॥ ॥ **आधिक सन्निपात**
 ॥ **पिरुल्ल** ॥ ॥ **आधिक वद** ॥ सन्निपात चिकित्सी॥ ॥ **गुडुची** ॥ चन्दनं यदं नागवेन्दु यवा

सकं॥ अरु यावग्य धाजी नया वधा न्याव गोहिती॥ कषाय पाथ यद तत्पिपलीचुर्लु
 संयुगं॥ ज्वसका हाह नर्तदीपिपा सादाह नाजनी॥ विद्यु गानिल विष्टरु पिदाषपुरु
 वस्यचा॥ गुडूयादिगल्मह षया च नादीयतः पर्नी॥ गुडूयादि॥ ॥ लवङ्ग द्यस्क नैरुं
 गजादी कैरुल सगावनी॥ मागधी गुनू कषा च वर्षा रू न क च नर्तनी॥ नाग के ज न पथ
 लाज रू नाष्ट सम सध॥ कुरु नं करु पिरु नां सन्निपात द्वा राय हं॥ लवङ्गादि॥ ॥
 कर्पू नम वृका जी न क लु का य्या जठी क ल्म॥ शृङ्गी का ज्मी न जा गुं ठी द्यस्क नै जाति
 पणिका॥ जर्क नाम ध ना ल हं सन्निपात द्वा राय हं॥ ॥ ज्वम पिरु पुवृद्ध पुहिका गन्डा
 उडुका रुदिना जेका डा को सम ध म कि का ल व म स म न या ल्य स न्निपात म के क न॥

चमः ज्वम॥ कर्पू नादि॥ ॥ लवङ्ग द्यस्क नै र गन्ध ना कुली॥ लवङ्गी ता
 नमो दा नि पि रु ला गि वि द्या समी॥ जर्क नाम ध ना ल हं रु क्ये त्पा न न ति री॥ ॥
 जीप का ज्म न चि ल्म ज्वम गहि क्ता यु क म्पनी॥ पि द्या पा नि प्प दा पा ति द्वा ना मी
 सार वि र ल्म न॥ ॥ लवङ्गादि॥ ॥ पिरु ज्वम द न सन्निपातः॥ ॥ सम दा ष प
 क्ता नि सन्निपात चि कि लि र्नी॥ ॥ दा द्वा द्य स्क न शृङ्गी च ल व र्ग क द्वा क न र्य॥ ॥
 पि रु ला म ध ना ल हं रु नि द्या ष ग म पि॥ ॥ दा द्वा दि॥ क द्वा द्य द न दा द्वा द्वा द्वा
 ल वाल का ती ल ग ल व स म रा गं वृ ल्म के दा व ली र्नी॥ रु व ति पि वि वि धि ना ग म ना

लक्षणकार्याविधानां **व्यापादि** ॥ ॥ अथीफलानिडाकालिः शुद्धी मृत्युलसंयुतं ॥ अना
 (तुल्यसमायुक्तं वागपि कुरु पदं ॥ ॥ गुरुचीवृक्षी हाजी कुरु नाग नुयासकः ॥ कानवी
 पोस्कनामूलं पिसुगन्धीसंकुलं ॥ यथादक्षी गिकं नाम कीर्तिगहिका निती ॥ सचिह्नं
 मधुनालं देवातल्लसदा नली ॥ काजः ॥ अमः तथा हि क्काद्रवसर्वीतिवर्द्धनं ॥ **प**
दक्षीगा ॥ ॥ व्यापककुलकानका द्रुक्कनामूलकानवी ॥ पिसुगन्धि के गाली सज्जी मुक्त
 मधुचनं ॥ प के दक्षी गिकं नाम मधुना सरुलं रुथ ॥ वागल्लसदा कर्नकाजी हि क्काज्जी १०
 अमममचकं ॥ पिदाष सन्निपात वृषाह्येनूलसुदानली ॥ **प के दक्षी** ॥ ॥ अथीप

पठकं हाजी गुरुची ज्जुवेनकी ॥ रुनिस्त्रायमा न्व अरुया क द्ना हि ती ॥ व्याधीघ
 स्कनमूलं पिपलीक्ष नुयासकं ॥ देवदानसहानवसमहारभानिका नर्थ ॥ नमज
 धादिके जिग सन्निपात द्वा नापदं ॥ काजः ॥ अमः स द्वा र्हि क्का नाजी जग नलनया ॥
 नकपिरु मर्षी ज्जमषह द्वा द्वा नापदं ॥ **अथी** ॥ ॥ लवङ्ग क क्कालमजी न नन्दन
 रुग चरु द्वा व क व्यापमृत्युली ॥ हजी नक द्वा गुन पद के ज न नटं सविल्वी नलन स
 हाम्बुली ॥ क प्य नजाती रुल र्ग ग्राज क जि गा द्वा र्ग समसू द्वा वृत्तं ॥ अथी चर्त पा
 वनमग्निवद्ध नवलपदं वृषा पिदाष नत्पनी ॥ अथी विव न्ध द्वा र्ग गल गुरु हा

॥ अथ सहा द्वा द्वयज द्वा पीनसं ॥ गुरु ह्यपी सान गल गुरु वृद्धं निरुक्ति गुल्म कृष्ण च का
 र्ण ॥ प्राप्ता त्प जं त्वा द्वा निदि व्य मो ष र्ध पा ध्या नित्य त्मा कुरु ले पदं गुरु ॥ स्वात्मा रु र्वे त्प त्प ज
 नी नति स्थि र्गं सखा नि द्वा त्म निरुक्ति नो यथा ॥ गुटिका म्य कु या त्प द न हं जि र्गं ले हं प
 क र्था त्म द्वा संप्रय क्ता ॥ **जि हल व र्ग गदि** ॥ ॥ ४ ॥ ॥ यव को ल कल ल्हा त्म म्मु क्म ल क
 र्ण ० यो ॥ च के र्क म्मु छि मा ह ह्य प च द द्वा गु ल ज ल ॥ प र्क म्मु छि क मि र्ग ष वा ण पि र्क क र्ण
 य र्ण ॥ अथ गुरु म्मु ल व र्ग म्मु ल का स क र्ण य द्वा ॥ य व म्मु छि क र्ण ॥ ॥ स्थि त्म मा म ल क पि र्क ॥ ॥ १ ॥
 दा द्वा या स रु र्गं ल ज ॥ वि र्ग र्ग ज र्गं य क म्मु नो स रु र्गं ल ज ॥ वि र्ग र्ग मा म ल क पि र्क
 र्ण ॥ वि र्ग र्ग ज र्गं य क म्मु नो स रु र्गं ल ज ॥ वि र्ग र्ग मा म ल क पि र्क

लब्ध सहा द्वा द्वयज द्वा पीनसं ॥ गुरु ह्यपी सान गल गुरु वृद्धं निरुक्ति गुल्म कृष्ण च का
 र्ण ॥ प्राप्ता त्प जं त्वा द्वा निदि व्य मो ष र्ध पा ध्या नित्य त्मा कुरु ले पदं गुरु ॥ स्वात्मा रु र्वे त्प त्प ज
 नी नति स्थि र्गं सखा नि द्वा त्म निरुक्ति नो यथा ॥ गुटिका म्य कु या त्प द न हं जि र्गं ले हं प
 क र्था त्म द्वा संप्रय क्ता ॥ **जि हल व र्ग गदि** ॥ ॥ ४ ॥ ॥ यव को ल कल ल्हा त्म म्मु क्म ल क
 र्ण ० यो ॥ च के र्क म्मु छि मा ह ह्य प च द द्वा गु ल ज ल ॥ प र्क म्मु छि क मि र्ग ष वा ण पि र्क क र्ण
 य र्ण ॥ अथ गुरु म्मु ल व र्ग म्मु ल का स क र्ण य द्वा ॥ य व म्मु छि क र्ण ॥ ॥ स्थि त्म मा म ल क पि र्क ॥ ॥ १ ॥
 दा द्वा या स रु र्गं ल ज ॥ वि र्ग र्ग ज र्गं य क म्मु नो स रु र्गं ल ज ॥ वि र्ग र्ग मा म ल क पि र्क
 र्ण ॥ वि र्ग र्ग ज र्गं य क म्मु नो स रु र्गं ल ज ॥ वि र्ग र्ग मा म ल क पि र्क

वरुणी ॥ कर्पू नलुः हीमनी रवदी नी ॥ षड्भिः कर्पू नादिमधुपयकापलि तजि द्वा मुखया कर्तुं ना ॥ म
 पुनस्य च यकात्ती गृहीत्वा मग्निदाहयेत् ॥ पिप्पली चूर्णं सैयकं मातुलंगं नसामधुजि द्वा मुखवा
 ती पाकं चले पनं हिनमचा ॥ ॥ मुखपाक ॥ ॥ हृद्विज्जाला कटु काष्ठिरुला नव्यत्वे कर्तुं ॥
 सदा शारु कर्तुं कायः पर्यसर्वा कर्तुं नायदा ॥ रुदी कर्तुं ॥ ॥ शिरुला कटु कादा वीदु नालं रुम ताद्य
 ना ॥ ॥ वृत्ता पिप्पली स्यामा सप्ताकं दानमेत्वं ॥ ॥ चनी सवर्णा रुदा कर्तुं ना ॥ ॥ य
 लखलु हृद्विज्जाला कर्तुं कर्तुं च चूर्णं ॥ मधुता मालिह त्सा र्णं चर्तुं सर्वं नागजि ॥ ॥ द्वा न चनी ॥ १२
 ॥ ॥ जगियूषा पुवा लं च मन्त्रि चं शिनी वचा ॥ शैन्धवं वसु मूत्रं चैव नदी ता ज्ञान मरु मी ॥ ॥ रुदी ॥

नि
 विनीषती जमचं वमु मूत्रं लह त्समी ॥ श्रीरुर्तनं गदरि न्याम सै क्ता वा धन मिषा ॥ ॥ मातुल
 रु मर्मा मर्यादि कुलु ली यर्त मर्यादा दद्यात्पुनं ॥ नी गी द्वा कर्तुं निवेदा यर्त दिनी ॥ ॥ सुसै गृ
 हीत कय लहरे कर्तुं हा पादयो ॥ सला कय ल साधु वा गत सै क्ता ॥ ॥ रु नी मकी ल
 न म त वृत्ता लु धा नय गुरु षक् ॥ नत सै क्ता पुत्राय न्क श्रुति न्या ॥ ॥ विज्जाला ॥ ॥ अरि न्या
 ॥ ॥ वीज पुत्र क मूला नि न्यग्नि म न्क ल्पे वच ॥ सनाग र्म दव दानं ना चि व क य
 विनी ॥ ॥ ए लय नी मिदं शुद्धं गल ज्यय ध ना ज्ञानं ॥ कर्तुं मल ॥ ॥ जिनीषा लु उज्जु ली
 वचा कर्तुं लका जि के ॥ कर्तुं ज्ञा धरु नी लयः सन्निधानं कर्तुं मू ॥ ॥ कर्तुं ज्ञा ॥ ॥

॥ ४४ ॥ द्रु ने नमस्कृतं वमनं उपवासं च का नये ॥ सकपदे रु नक स्या यथा समं समानि
 च ॥ ॥ मरुती पिपाति भिर्वा कर्लिंग मधु के न वा ॥ मुक्क म्बु ना गत पर्यं वमनं द्रु न जी नये ॥
 जि वा चा मल की शुष्ठा वा सकं द्वि गु ना रु वे ॥ जर्क नाम धे वा ना ल हा वमनं विष मद्र ना
 न ॥ आ न ग्ग व धे वा प य सा मृ द्दी का नी न स न वा ॥ ह व ना गाय सा न चा प य सा ज्व नि र्ग पि वे ॥
 ॥ ॥ दा क्क मल क मृ द्दी का न भ नि नु न स न वा ॥ न नू ल पि द्रु न न धा क र्क का थ वि
 भ व नी ॥ य ठा ल गि रु ला वा सा न क च न्द न भ व च ॥ जि ना म ध य ना ल ह पि ल वि ष मद्र ना द ॥ १३
 दं ॥ वि फ ला पि पा ली मू र्क म ऊ डी ना ग के ल न ॥ ल र्व ग य व नी जा ती सृ र्क ला वा स क स मी ॥

जर्क नाम धे ना ल ह वि ष मद्र न ना ज्ज नी ॥ ॥ वा सा र ल ह का ज नी सृ र्क ला जी न क द्र य ॥
 ल र्व ग के ल न स्या मा पि पा ली मू र्क य न के ॥ ॥ द्दी व ना गी च नी विल्व म नि र्व वि ल्व रु ष ज ॥ वि
 डि रु रु रु ना ली स र्क द नी न न ल ह य ॥ वृ ह द्वा सा दि को र्क ष वा न पि ल क रु पा र ह ॥ ह
 रा दा रु रु म ज्जु दि मू र्क नू चि द्वा म य ॥ का ज्ज म स जि न जू ल ह त्या ज्ज वी रु ना ग
 नू र्क ॥ नू का हि के र्क ॥ हि के च ह नी य क च रु र्क ॥ वि ष मद्र न स र्व ष ना सि र स्था ष
 धा प र्म र्क ॥ वृ ह द्वा सा दि ॥ ॥ ह व ना ह रु ला सा मा य ठा ला धा न्य के ल न ॥ सा जा डी प र्क
 र्क मू र्क ल व रु चै वि ज्ज न के ॥ ना ली स र्क गि के वा सा स म चू र्ण नि का न ये ॥ ॥ जर्क नाम

धूनालहनिहनिविषमद्वान्न॥ वातिकेः पेलिकेः ज्येष्ठपिषिकेः सन्निपातिकेः ॥ नकुपिलक
 वल्लुहिहिक्कामृष्टमिदमुमा॥ नखत्वकर्पागनगुत्वविहतिवन्धनियच्छुति॥ ऊष्ट्रवासादि॥
 ॥ शिकुविहनास्यामाविठिहनागकेजने॥ मज्जाजीवस्कनेमलेलवडैमसुक्तानिके॥ सम
 सिहपमायकैमधनासहलरुथ॥ तानल्लुष्याधिकेदाषनिहनिविषमद्वान्न॥ नकुमद
 लिनल्लानेदुदचतमीहनी॥ रुडागज्जसकाजघ्नंनुताञ्चनमृभापमं॥ मध्यमवायक॥
 गिरुलाजाजिकोक्कुपिपलीमसुकेजने॥ लवंगज्जानिकोस्यामातालीसंविजाककं॥ वंस
 ज्जासकैयकैसमरागानिकानये॥ पिल्लुष्याधिकेदाषसदाहपनभाषधी॥ चर्कि

मृष्टमज्ज्येष्ठसन्निपातारुवानिद॥ विषमद्वान्नसर्वेषुपीयकचतुर्थिकं॥ कभष्ट्रवासा
 दि॥ ॥ गिरुलागागधीजाजोका नवीमसुकेजने॥ स्यामीलारुक्कंजागीलवंगवासकैसमी॥
 जिनामधुयकालरुवानपिषिकेद्वान्न॥ रुष्टामृक्कुमादाहदुडागकुहिंनवच॥ निहनि
 पनभासुविठिदाषविमद्वान्न॥ रुणीयवासक॥ ॥ शिकुगिरुलामसुविठिगनज्जनीद्वयं॥
 ज्जागीरुलंलवंगचतालीसंज्जकेजने॥ ज्येष्ठल्लावासकैयवणकैनामधुनालिह॥ पि
 ल्लुष्याविकानाल्ल॥ विषमद्वान्ननक्त्य॥ ॥ ॥ गिरुलावाषद्वेजाजीविज्जाग
 न्धिस्तथेवच॥ ज्जागीफलस्यनालीसविठिगविल्लसंवच॥ कालवासकैयकैसर्वस

सगर्कनी ॥ लहय मधुनायकं हरीयकचतुर्थकं ॥ ज न व म्वापि विषमं द न जी लूवा
 धारु वि ॥ का ज ॥ म ॥ न ॥ ल ॥ ह ॥ पा ॥ ध ॥ धी ॥ ह ॥ न ॥ ग ॥ ल ॥ ॥ वा सा दि ॥ ॥ व ॥ हि ॥ धि ॥ म
 ॥ ति ॥ रु ॥ ल ॥ ल ॥ व ॥ र्ग ॥ रु ॥ ल ॥ ह ॥ य ॥ ज ॥ डि ॥ य ॥ र्ग ॥ कु ॥ मा ॥ न ॥ ॥ य ॥ वा ॥ स ॥ र्क ॥ च ॥ ल ॥ स ॥ म ॥ द ॥ म ॥ ग ॥ जि ॥ वा ॥ च ॥ तु
 ॥ म ॥ हि ॥ मा ॥ द्वि ॥ क ॥ च ॥ ॥ म ॥ को ॥ प ॥ र्ग ॥ पि ॥ क ॥ र्क ॥ नि ॥ ला ॥ र्क ॥ स ॥ म ॥ स ॥ स ॥ नि ॥ धि ॥ वि ॥ न ॥ म ॥ वा ॥ धा ॥ च ॥ ॥
 ॥ र्ग ॥ नि ॥ स ॥ न ॥ र्ग ॥ ॥ ला ॥ प ॥ हा ॥ नी ॥ रु ॥ ज ॥ नि ॥ ल ॥ दा ॥ हि ॥ ष ॥ र ॥ दु ॥ ल ॥ द ॥ ॥ द ॥ म ॥ ग ॥ ॥ ॥ रु ॥ ल ॥ ह ॥ य ॥ क
 ॥ ह ॥ र्ग ॥ वि ॥ म ॥ र्ग ॥ ॥ ह ॥ र्ग ॥ न ॥ क ॥ ॥ प ॥ दु ॥ ह ॥ र्ग ॥ म ॥ ग ॥ नि ॥ ह ॥ र्ग ॥ नि ॥ क ॥ ह ॥ र्ग ॥ स ॥ च ॥ ल ॥ नि ॥ ॥ प्रि ॥ य ॥ स ॥ य
 ॥ क ॥ ला ॥ म ॥ नि ॥ वि ॥ म ॥ द ॥ न ॥ ना ॥ ज ॥ न ॥ ॥ न ॥ का ॥ हि ॥ क ॥ द्या ॥ हि ॥ क ॥ च ॥ ह ॥ नी ॥ य ॥ क ॥ च ॥ तु ॥ र्थ ॥ क ॥ ॥ का ॥ ला

15

96

कालरु व ॥ ल ॥ व ॥ नि ॥ दा ॥ र्ध ॥ व्य ॥ पा ॥ रु ॥ नि ॥ प्रि ॥ य ॥ स ॥ य ॥ क ॥ च ॥ ल ॥ ॥ ॥ पि ॥ य ॥ ली ॥ च ॥ न ॥ न ॥ म ॥ स ॥ म ॥ जी ॥ र्ग
 ॥ क ॥ दु ॥ नी ॥ हि ॥ ली ॥ ॥ क ॥ नि ॥ र्ग ॥ का ॥ हा ॥ म ॥ ल ॥ की ॥ ज ॥ म ॥ नि ॥ वा ॥ नि ॥ वि ॥ षा ॥ रि ॥ ना ॥ दा ॥ दा ॥ म ॥ ल ॥ द ॥ दि ॥ ल्या ॥ नि ॥ वा
 ॥ म ॥ ना ॥ नि ॥ दि ॥ ग्दि ॥ का ॥ ॥ मि ॥ दु ॥ भ ॥ न ॥ ल ॥ व ॥ र्ग ॥ स ॥ चो ॥ द ॥ न ॥ जी ॥ लू ॥ वा ॥ पा ॥ रु ॥ नि ॥ ॥ क ॥ य ॥ का ॥ जी ॥ नि ॥ न ॥ ल ॥ पा
 ॥ र्ध ॥ ल ॥ रु ॥ ली ॥ म ॥ क ॥ ॥ म ॥ ग ॥ रि ॥ ना ॥ य ॥ म ॥ नि ॥ ॥ वि ॥ ष ॥ म ॥ च ॥ नि ॥ य ॥ क ॥ नि ॥ ॥ पि ॥ य ॥ ल्या ॥ दि ॥ द ॥ र्ग ॥ ॥ ॥ धी
 ॥ वि ॥ ष ॥ म ॥ द ॥ न ॥ ॥ ॥ ह ॥ क ॥ ल ॥ क ॥ व ॥ ला ॥ व्या ॥ धी ॥ गु ॥ उ ॥ ना ॥ ग ॥ न ॥ सा ॥ धि ॥ र्ग ॥ ॥ व ॥ र्ध ॥ म ॥ वि ॥ व ॥ न्ध ॥ ध ॥ म ॥ थ ॥ द ॥ न
 ॥ ह ॥ न ॥ म्प ॥ नी ॥ ॥ दी ॥ ल ॥ द ॥ ॥ ॥ य ॥ र्क ॥ का ॥ ल ॥ य ॥ व ॥ न ॥ य ॥ थ ॥ क ॥ प ॥ ल ॥ म ॥ क ॥ द ॥ य ॥ स ॥ र्ग ॥ म ॥ क ॥ श ॥ द ॥ क ॥ न ॥ स ॥ य ॥ रु
 ॥ क ॥ म ॥ य ॥ र्क ॥ च ॥ न ॥ डि ॥ या ॥ च ॥ न ॥ का ॥ हि ॥ क ॥ द्या ॥ हि ॥ क ॥ ह ॥ नी ॥ य ॥ क ॥ च ॥ तु ॥ र्थ ॥ क ॥ वि ॥ ष ॥ म ॥ द ॥ न ॥ म ॥ स ॥ का ॥ ला ॥ दु

वाकटु कजादि ली॥ यावत्सकवी जानि ह॥ त्रीत काम ह॥ षर्वे॥ नुत दाम समुल्ल
 ना मनी सा नमवेदनी॥ कसकं सपिह च वच्चो वधमनिर्वेधुर्व॥ ॥ ध्यान नाग नम
 सुर्वे वाल कं विन्मवच॥ आस गूल विवन्ध घृण चर्न वद्विदीयनी॥ ध्यान पर्वक
 ॥ लघु लघु पृष्ठ वल्ली वला विल्व सदादि सं॥ विल्व पर्वे मसिती तेः शृती नाय पुत्र
 ॥ तं कं यथ नमया नमं गम ह्युचयं सुतः॥ सानि सा नम सकश्च वल्लभ न विल्व प
 र्वे कं॥ विल्व पर्वक॥ ॥ कलि गमि विवाम सुं हि गुप ध्या साव च लम्ब या॥ शूल सु
 विवन्ध घृण यदीय नवा चर्न॥ कलि ह्यदि॥ ॥ पिपली चारु याम सु ध्यान ह्युली

उदामा ॥ आमज्जुसकविभावाग्नीर्लुचविनालय ॥ आमागीसाव ॥ ४॥ ॥ अम्बस्वाधन
 कीलाध्रुसमंगमतागवजनी ॥ आत्मलीवस्वकीलाध्रुवृद्धातिमयावच ॥ आमुस्त्रिमधाली
 लाध्रुवविल्वमध्रपियंगुव ॥ मध्रकष्टगवेनवदीर्घवृत्तलजवच ॥ चत्वात्रयस्थिना
 : स्यः पद्मागीसावनाजनै ॥ उक्तायैरागवजनी ॥ स्यः सङ्गमगुलाम्बना ॥ ॥ पद्मागीसा
 व ॥ ॥ कर्कटजम्बुदातिमष्टकाटकयवकावनाजलननागवसहिर्ग ॥ नलुलजलमपि
 सयवमिवमनियुसमैमर्मान ॥ वगगावगतिवृद्ध ॥ ॥ जम्बास्त्रिदेवमष्टास्त्रिदा
 तिमस्यत्वचनृद्ध ॥ नसजिनमननाचसुद्धलापद्मकजनी ॥ साद्विकैरागसयूकमह
 मस्तवस्तकविजानिभावनावेवलोपुष्पागकीगुजमध्रिगसयूकगंगासयिवैगवनिनृद्ध

संग्रहिकं मर्म ॥ ॥ भावनसात्त्विकनागनावात्मालनध्वनिकिरुसमी ॥ चूर्तुमथितस
मर्तव्यद्वितर्गमपवाहमपि ॥ ह्यसाहानवर्गवया ॥ ५॥ ॥ वक्षामनिविषामुसुवी
जनिकुटजस्य च ॥ ६ ॥ शिवागमिसाप्रचयात्मवशनथाद्रिर् ॥ ७ ॥ दागमिसा ॥ ८ ॥
मधुकंककफुल्ललाधुंदाधिमस्यरुन्तवच ॥ पिरुगमिसाप्रमधुकं पाययल्लुलाभ्यता ॥
॥ पिरुगमिसा ॥ ९ ॥ ॥ चव्यासानिषाकहं वालत्वसनागर् ॥ वल्यकत्वकरुत्तपथ
ध्वसर्वध्वमिसाप्रनर् ॥ १० ॥ ध्वमिसा ॥ ॥ कटजनिविषामुसुवालकं लाधुयं १२
चन्दनं ॥ ध्वनकीदाधिमपावकाधध्वनयतापेव ॥ दादवकं मण्डलचञ्ज १०

मन्त्राजमूदुक्तं ॥ कृत्वादिमिति नानां सर्वाङ्गी सावनाजनी ॥ कृत्वादि ॥ ॥ इति
धनानि विषाम् सुविल्वधन्यकवत्सर्क ॥ समं गन्धकीलाध्वं विश्वं दीपनपावनं ॥
सहस्रानि गन्धकीलाध्वं नवाधविद्वन् ॥ वृहत्कावनादि ॥ ॥ विल्वरागपयः सि
द्धं जितभावनसन्धिनी ॥ कर्त्तुं चूर्त्तसंयुक्तं नकाङ्गी सावनाजनी ॥ ॥ कदल्याम्
कलीपिष्टपायथलुलाम्बना ॥ रुज्येत्पयसा र्वमहाज्मानितस्तान्तरा ॥ नकाङ्गी
सावना ॥ ॥ च ॥ पक्ष्ममूली वलाविल्वगुपूची मूर्ध्ने नागनेः ॥ वावरुनिम्बकावनः कृत्वा
त्वकुरुतेः शृङ्गी ॥ रुक्मिसर्वाङ्गी सावना सुद्वन्द्वोषवमिन्नुत्था ॥ सङ्गुलपद्वेज्यसंका

५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 ३५
 ४०
 ४५
 ५०
 ५५
 ६०
 ६५
 ७०
 ७५
 ८०
 ८५
 ९०
 ९५
 १००
 १०५
 ११०
 ११५
 १२०
 १२५
 १३०
 १३५
 १४०
 १४५
 १५०
 १५५
 १६०
 १६५
 १७०
 १७५
 १८०
 १८५
 १९०
 १९५
 २००
 २०५
 २१०
 २१५
 २२०
 २२५
 २३०
 २३५
 २४०
 २४५
 २५०
 २५५
 २६०
 २६५
 २७०
 २७५
 २८०
 २८५
 २९०
 २९५
 ३००
 ३०५
 ३१०
 ३१५
 ३२०
 ३२५
 ३३०
 ३३५
 ३४०
 ३४५
 ३५०
 ३५५
 ३६०
 ३६५
 ३७०
 ३७५
 ३८०
 ३८५
 ३९०
 ३९५
 ४००
 ४०५
 ४१०
 ४१५
 ४२०
 ४२५
 ४३०
 ४३५
 ४४०
 ४४५
 ४५०
 ४५५
 ४६०
 ४६५
 ४७०
 ४७५
 ४८०
 ४८५
 ४९०
 ४९५
 ५००
 ५०५
 ५१०
 ५१५
 ५२०
 ५२५
 ५३०
 ५३५
 ५४०
 ५४५
 ५५०
 ५५५
 ५६०
 ५६५
 ५७०
 ५७५
 ५८०
 ५८५
 ५९०
 ५९५
 ६००
 ६०५
 ६१०
 ६१५
 ६२०
 ६२५
 ६३०
 ६३५
 ६४०
 ६४५
 ६५०
 ६५५
 ६६०
 ६६५
 ६७०
 ६७५
 ६८०
 ६८५
 ६९०
 ६९५
 ७००
 ७०५
 ७१०
 ७१५
 ७२०
 ७२५
 ७३०
 ७३५
 ७४०
 ७४५
 ७५०
 ७५५
 ७६०
 ७६५
 ७७०
 ७७५
 ७८०
 ७८५
 ७९०
 ७९५
 ८००
 ८०५
 ८१०
 ८१५
 ८२०
 ८२५
 ८३०
 ८३५
 ८४०
 ८४५
 ८५०
 ८५५
 ८६०
 ८६५
 ८७०
 ८७५
 ८८०
 ८८५
 ८९०
 ८९५
 ९००
 ९०५
 ९१०
 ९१५
 ९२०
 ९२५
 ९३०
 ९३५
 ९४०
 ९४५
 ९५०
 ९५५
 ९६०
 ९६५
 ९७०
 ९७५
 ९८०
 ९८५
 ९९०
 ९९५
 १०००

८१

30

25

नागनातिविषामर्कं सुभ्रूलाविल्ववाल्मीकीं ॥ त्वक्की नीमरुमादं च जामासिरुडमर्क
 कीं ॥ गुरुही सामनर्कं च लूलसर्वागिसाननं ॥ अग्निसंदीपनलर्कं पिव रुहलवानि
 ना ॥ **नागनादि** ॥ ॥ **वाकगुरुही** ॥ नागनातिविषामर्कं धातकीसनसाऊर्त ॥ वचकत्वक
 रुतं विल्वयावकटुकनाहिली ॥ पिवत्समासर्गचूर्णसंक्षेपेन लूलान्वना ॥ पेलिकगुरु
 ली दाषनर्कं यक्षोपवर्ज्य ॥ अर्भी स्पथगुदशूलजयशेवप्रवाहिका ॥ नागनाद्युमिदं च
 धुंकुषुपुयेन पूजिता ॥ **नागनादिचूर्ण** ॥ **पिरुगुरुही** ॥ ॥ समूलपिपातीक्ष्णाशोपके ॥ २१
 लवनानि च ॥ मातुलंगरुया नास्त्राजलीमनि च नागने ॥ कृत्वासमासर्गचूर्णं पिवत्सामस

याम्बना ॥ ॥ **शुष्की** कगुरुही दाषवलमान्साग्निकर्तुर्न ॥ **पिपात्यादिचूर्ण** ॥ **शुष्कागुरुही** ॥
 ॥ ॥ जागीरुललाकर्षा ललवडाजाली मेन्धर्व ॥ मनिचानिपलाट्टके पथ ॥ ककुषिका
 पिक्की ॥ अमुवीजपलर्कचकर्षानिविल्वषष्टर्क ॥ अहीसा नसकष्टचगुरुहीमासनागि
 ना ॥ अग्निसंदीपनहृद्यसंक्षेपविल्वषष्टर्क ॥ **विल्वषष्टर्क** ॥ ॥ कर्षात्मिनादुगमकी
 ग्रीवागुह्नीगद्विकापिकी ॥ यमान्नीक्ष्णकाजाली ग्रीहीयोषपलीजिकी ॥ यन्तानिदाति
 माचाष्टाजिनायाचकनकर्तुं ॥ गुलीकपितृष्टकवचूर्णयंदतिमाष्टर्क ॥ **दातिमाष्टर्क** ॥
 ॥ विरूतिनग्निर्यनिदातिमर्कं यमानिकासेन्धवधातकीचा ॥ कटुगुणविल्वरुतासुवीर्ज

वै.सि.न.पत्र १४४

लपयित्वा प्रजलेन निहन्ति गुदजाम्भयं ॥ लपन ॥ ॥ चूर्तुकृताः प्राग्गुमसूत्र
 स्मृता गमसूत्राद्व निचविगु कम्पा ॥ मदाषध्या ॥ इमिनिचस्य चका गुठनडुर्चा
 मज्यापिल्ली ॥ गुनलपिल्ली ॥ ॥ लुलीक ॥ मनिचन्ता गदललल गलाचूर्तु
 कर्तुं कमवि वद्धि नमूर्द्धमन्त्या ॥ पाददिदं समन्तिर्गुदजाम्भिसाद्यं गुल्मा नृचिस्त्र
 लनक ॥ हृदामथषू ॥ ॥ समलक ॥ नादिचूर्तु ॥ पाली सपण चविका मनी बानी
 पलीयली ॥ कृष्ण नमूल द्वे द्वे च यल्लुली यल्लुयी ॥ वाडुर्जगमूली नये कर्षी ॥ २३
 ॥ चूर्तुर्गु ॥ गुठनवटका कृत्वा पिगु नन सदा रुज ॥ मद्ययूषरसानि ह्रमसु

धयापयान्प ॥ वागुल्हात्मात्मनाहृदिगृहस्थीयाज्वहदुत्ता ॥ कनः ज्वयथयत्तु
त्वगुल्हात्मात्मनाहृदिगृहस्थीयाज्वहदुत्ता ॥ कनः ज्वयथयत्तु
गनस्त्वनदद्यात्तुदेवविद्महे ॥ च्छर्द्यादिष्वपिहृष्वचउर्गुल्लिखान्विमा ॥ यत्क
नवटकाकायागुत्तुनलिदयापिना ॥ त्रस्रपिलान्तिमाद्यादीपयाकागुदजातुने ॥
कानिस्थादिवटक ॥ ॥ पिप्पलीमधुकीविल्वसगादामदतीवच ॥ कृष्टजठाय
स्तनाद्वचिकर्कदवदान्च ॥ पिष्ट्वापेलवियकवीद्विगुलीकीनसंयुत ॥ त्रजो
सिमृष्टवागतालीतकुष्ठमन्वासन ॥ गुदनिःजनहीज्वलीमृष्टकुष्ठुप्रवाहि

कां॥ कष्टं नृपद्वयोर्वल्यमानाहं वदन्ता॥ मुर्यं॥ पिच्छाग्रवगुदं मथवागवचो
 विनिगृहं॥ ५॥ नानं वदुमावचजय रुचा न वासना॥ ७॥ **पिपल्यादिगिल**॥ ॥
 पृ वगभवनाधसीष्टृष्टमानमत्कटकासन॥ जथास्वदाषलं वान्नमर्जसाः पति
 वदुय॥ ॥ **नर्मिका नचदुर्धः**॥ ॥ ४॥ समस्य नदसं कार्य विषमवा
 ननिगृहः॥ १॥ पीरुपरी कात्रासन्दं विलम्बतः॥ ॥ **शिकटकमजमा**
 दासेन्धर्वजीनकं द्रुसमध्वनसधृणानामष्टभादिगुरुगः॥ प्रथमकवल
 रुकं सर्पिषा चूर्तुमिगुरुतयतिष्ठ० वाग्निं वातत्रीगश्चरुनि॥ **हिग्वाष्ट**

28

कचूर्ण॥ ॥ सिन्धु नृदिगुचिरुलायमानो वाग्निं गुं जालगुटिकापुकर्या
 ७॥ **पेरुनिगसु** फिमवा न्नवनाहं जीममन्दाग्नि नपिपरुता॥ ॥ **मग्निमन्द**॥
 ॥ रुनीतकी धर्मु नोषादसिद्धासपिपलीसन्धवदिगुचूर्ण॥ साहानधर्मरु
 समवाजीर्ण विद्रिह्य सदा जतये० दुर्ध्वं च॥ ॥ **सन्धवदुष्टव** विहीनं हि
 गुभवच॥ कुष्ठं लज्जुनत्वकपरं समभागानि चूर्तये० ॥ सुनामिदनपातवामि
 जीर्णं रुनसं सदा॥ सर्वगपुनर्यया न्कियपि वै० **सिन्धु द्वादश**॥ **सिन्धु द्वादश**॥
 जुष्टीमागधवद्रिध्वात्पकयर्तहिगुद्यनदीपनं वाग्नीलमहुनकद्वि नकविर्

सावर्चलसन्धर्व॥ गुर्वाहानमजीलुकिदुपिकनचुलुकिर्गसागशा०० हन
 द० वानलपगिसर्मकाष्टाग्निसदीयनी॥ वरुवानलचुलु॥ उष्टुदक
 याना॥ ॥ आमाजीलु॥ ॥ विदयुक्तयस्यगुरुकुमाददककृत्कोष्टगलचय
 य॥ दाहाजिनामादिकसंप्रयकालीरुहयार्थः समस्तलहृत् ॥ विदयुक्तलु॥
 ॥ ॥ हिं गुरुल॥ तवदकवचादिगुलार्गमव॥ वैठंगगिगुलार्गवष्टुगवज्व
 वुरुल॥ यमानोयकेगुलिमेषहुलचारुयारुव॥ चिपकसकगुलिमेषुष्टुच
 लुनिकानय॥ मदनवापथाननमथामुष्टुदकेनवा॥ गूलघ्नीदीयनीय

२५५

केजीलघ्नीगुलमगूलन॥ आसकाजलनचुवचुलुमानारुहदनी॥ आपयवि
 हिमनरुवांनामाभर्दुनडयान॥ ॥ भर्दुलचुलु॥ ॥ विष्टुलु॥ ॥ य॥ पिप्यलि
 सयकचुलुसावर्चलपि०॥ मसुनीष्टुदकेनाथवृद्धादाषमेर्गिहिरुका॥ चतुर्विधि
 मजीलुचमन्दातलमथानचिभ॥ आभनवानगुलमचगूलवासानेयकनि॥
 ॥ गूलमलाकेनत्रत्वकयर्गतालीसकैलुहा॥ पृथ्वीकाजीनकैआनंदातिमवाह
 काधिक॥ पिप्यलीपिप्यलासूलचवाचिगुलतागर्न॥ मजीचदिवाकवववृहा
 म्नुवास्तुवनर्म॥ अजमादायेगन्धवदधिन्वापिकाधिक॥ पुदयमतिमृदयः
 शिष्टयुक्तय आसागवाजववदिदुलमसुनापि० वृ० खलुनकवदि० गेसापिसुष्टुनवनत्रोक्तुमातमथानमकासदिकानन॥

:लर्क नायाऽऽनुवर्त ॥ चूर्णमग्निपुसादस्यादस्यापनर्मचिवर्द्धनं ॥ प्रीहाने
 कालमर्जसिन्धुर्लक्ष्मसावेमिह नः ॥ निहनिदोष्ययं त्वाग्निवत्तवर्द्धमदप
 नं ॥ वाता नलोमर्तहृद्यं केहृदि द्वाविष्णुधर्त ॥ **शुद्धीलादिचूर्ण ॥** ॥ **शुद्धीला**
 ॥ शुद्धीचकूर्णलवर्णं अरुयाचूर्णसंयुतं ॥ हिं गयवाच नापीतं सर्वं शुद्धलवितो ज
 नं ॥ ॥ हिं गुकपोसमूलानि नागनागकेन नै ॥ नागानि समरुगति क्वाथयित्वा जलपिक्व
 ॥ कृदि शुद्धलमनी सार्जं गिरिः पानीपुसस्य न ॥ चूर्णं समं चकहिं गुमहाषं नै ॥ शुद्धीला २६
 नाकफसमीनं सक्तु वाद्य ॥ हृत्पाथ्येष्ट ० गार्हविस्त्रिकाष्ययं नथयवनमंतु

विद्वि वल्थ ॥ हिं गुासावर्चल २ शुद्धि ३ ॥ **चूर्णकादि ॥** ॥ **कृष्टमन्थयाकल्कं चूर्णं**
 तममन्थितं ॥ विसृज्यामर्द्धनं काषूं खली ॥ **शुद्धीलादिचूर्ण ॥** ॥ **पिप्पलीपिप्पलासूलचिगकाह**
 सिपिप्पली ॥ हिं गुचव्यजमादच पचै ॥ लवल्मनि च ॥ दो क्राशोरुपुषाचै वदद्यादहं प
 लान्तिना ॥ अधिकारि कयुक्तानि पुनमाशममानि च ॥ आडकस्य नरपुस्तु द्युतपुस्तु
 विपाचय ॥ च नदग्निद्युतं नाम मन्दा ग्रीतां पुजास्य न ॥ अर्जसां ताजयं लुष्टं तथगु
 लाद नापदां ग्रं बर्द्धिदायवीकाजं करुमदा नि लानपि ॥ ताजयं गुहृही दाषं ज्वयय
 शुद्धीगन्धनां यचवसि गता भागयच कृदि स माग्निता ॥ सर्वस्मात्ताजयं त्वाससूर्य

सुम०० वादनः॥ अग्निघ्नः॥ ॥ अजीर्णविस्त्रिकाधिकानपर्वमः॥ ॥ ॥ ॥
 जिवाविडिङ्गुलसुतः कटुर्लविपाचिर्गं। लपात्सलिविकायूकामाजन्तय
 तिनूयं॥ यकाहननैल॥ ॥ विडिङ्गुलिरुलाकृष्णचूर्णुलीरुसमदिी कं। हकि
 काष्टकिमिमहान्दुष्टताडीरुगंदवाना॥ ॥ मध्विडिङ्गुमनिचलद्रुं किमिवि
 नाजने॥ ॥ अजभादष्टिकटुकं पथ्यवद्विद्विजीवकं। विडिङ्गुगुठिकाविल्यमिजा
 नकलार्कवायलानवीजानिसंचूर्णु नूचिडिमिनाजनी। शमानिसावग्रहली
 श्वासकाजप्रीहापहा॥ ॥ किमिधिकावपष्टमः॥ ॥ ॥ ॥ अयसिलपुष्ट

दुष्यन्तिरुतसुविडिमेविडुकाः समाः नवायोनजसोरागाहृत्तुमध्वसिक्का रुक्मंकापुष्टुदेमीकुसुर्गकामलायहंनवायुर्ज
 कोलरागेः सर्वः समंमाहिकधानुचूर्णु। मभादकः शोडयमानपकुः पात्सु
 मयदुर्गजकृपिससं॥ ॥ पत्तर्णुवानिचपठालतुष्टीमिकामृतादाव्यरुया
 कषायः। सद्योदुल्लभाद नकाजालूलश्वासान्निगंवाहुरगदं निहन्ति॥ ॥
 डाकाहनिडामजिष्टावलासुलान्पयाननः। धात्रीयलसरुसुडुषीउयित्वा न
 संरिषकाशोडाहृरागपिण्णस्य चूर्णुर्दुक् उवायतं। जर्कवाट्टुलामिष्ट
 कंस्तिग्धद्यटस्त्रिगं। सपिवं यदिवापायः जीर्णुहिनमिगालिनां कामला
 रुडागवाकाशविषमज्वनात्। काजालिहृक्कानूचिश्वासान् ज्यषानिष्टपुष्ट

नादि॥ ॥ चन्द्रनाम्न उगमदीपिपलीचकुलत्वच। केन न पणकं पद्मं मूलाङ्गीनपि
 यं गुकेः। लवंगजीनकं धातुं त्रिरुलातीलमत्पली। पर्वटं वृत्तं वासानालीसंनकच
 दनी। लवंगलीमधुना लहं जातीयात्कसलीहिषकापत्रमंनकपिरुघ्नसन्निपागरुनय
 न। हृत्पाश्वललक्ष्मसंचकाहिकामदरुमी। त्वक्नमंनमूरुनिर्नृद्धिं मूलाङ्गीप
 हं। जीर्णुक्नविबन्धघ्नं भाचर्नवलवर्द्धनं॥ **वृहच्चन्द्रनादि॥** ॥ अलिषष्टिकनीवा
 नरलमरुमसूत्रिकापठालतिम्वर्णगगनधुलीपादयाहिना॥ पात्रावगकपागायाः जल
 निलसुधा। प्रथाज्यानकपिलक्षीयाज्मवायदिवागद॥ नकपिलुधिका नम्रसः॥ ॥

२२७
 ॥ च॥ ॥ कृष्णदाक्षजिगालरुयेरुहाक्षोदनेलवान्॥ मधुसर्पियथावाञ्छगन्ध
 कृष्णजिगोद्व॥ **क्षीतकृष्ण॥** ॥ मधुगार्हविर्तिंगममज्जुलारुघ्नारुया। घृन्ति
 गन्धममलुगुमवासाताहिनाजिना॥ ॥ लीगात्पलागुगमदीपिपलीचकुलत्व
 च। अन्त्यात्पुष्टिगुहिनैलरुयमधुसर्पिषा। वृर्धुनं पासयदनमृज्जकाङ्क
 फातुरं। पार्श्वललीनिमल्याग्निगुहजिद्रामभाचर्क। हसपादांगदाहृष्टकनकं
 धादं॥ **लीगात्पलादि॥** ॥ नुलजभादामलकारुयागुगयजिनिम्वसनेसालसा
 नाविर्तिंगरुलानकचिक्काथकद्रिकाश्रादुसनादुजांवापक्काजलननपचकु

सपिण्डस्मिन्सुसीद्धे त्ववगात्रिभवे। त्रीसत्यलात्पुनर्निभात्पलायादद्यालुगाकीत्रि
 यलानिषदु। पुस्तुयुनस्यद्विगुर्नचदद्या० कृद् नभामस्तु दूर्नविदद्या०। यलं प
 लंपागनभालिहृच्चयञ्चातिर्वै० कीनमर्नदिनञ्चा। नगद्विभध्वपत्रमपविर्च
 कृष्यमायुष्यनर्मनधेव। यश्चानमास्वपहन्ति नूनं पाह्नु। मययेवरुगन्दनरी
 नैवागि किंचित्सविवर्जनीयं नसायलं च नदुपास्यमानं॥ **पुलादिमह॥** २२५। जीव
 नीमध्वकं डाकारुलानीकृजस्य च। जठीयस्क नमूलं च व्याघ्रीस कुनकं वलातील
 त्यलागामलकी शायमानाद् नालहापिपलीचमर्मपि ह्युद्युनयेद्याविषाचिनी। पुन

३०

द्याधिसमूरुस्य भागलस्यसमृच्छिगमा नूपभकादभविधं सपिण्डगुं व्यापाहनि॥
जीवन्वाद्यधुनं॥ म्याधुनं वलातागवलान् नान्धसिद्धसयष्टीमध्वकल्लपाटी। ह
 डागभूल्लङ्गनकपिरुकाज्भनिलसुकनमयलदीर्घु॥ **वलाद्यधुनं॥** ॥ मद्यानि
 जागलं यन्निमृगमसि विभुद्यागाम्। मूद्रवष्टिकलगधूमयवज्भल्यादयाहिनाः॥
वाजयन्तकृद्गुयाधिका नः नवमः॥ ॥ २२६॥ ॥ हागीडाका जठील्लुकी पिपलीवि
 ष्वरुषज्ज। गुणनेलयभालहः हिनामान्नकाभिती॥ **कनका** ॥ २२७॥ यजुत्रपिपली
 डाका निनालाजाम्। मान्द्रिको मध्वसपिण्यभालहः पिलका जहर्नयनी॥ **पिलका** ॥

लब्धसावचिरुनंग चूर्णदीयतपनी। हृत्पादुगुहो धार्यप्रीहृत्तमषड्नायहं। छर्द
 नीसावगुनैद्यमूठवीनानुत्तामनै॥ **गालीस्योदिभायक॥** ॥ गृहीसकनननुगम
 त्वचसामहीनीदुस्यजगुं ठीमत्रिचानिचवैगुजजी। प्रलानियस्कनमूलचैनुल्लीरु
 जीयलार्द्धकं चवकणसमसूक्ष्मचूर्ण। छर्दविपाच्यद्विगुहं गुठिकापुकुया ७ काज
 नथस्थयथपीननग्नसहाजी। वैश्वर्यमात्रनकरुदनहिक्काहनावैवर्ण्यपुष्टि
 कप्रमं नृचिमग्निकात्री॥ **मधुभायक॥** ॥ **काजविकित्साधिकाप्रदजमः॥** ॥ ४॥
 ॥ मधुकंमधुसंयुक्तं पिपलीजकं नान्वितं। नागर्नगुठसंयुक्तं हिक्काघ्नतावन

नयं॥ ४॥ ॥ कृष्णमलकगुलीनीचूर्णमधुसिनाद्युतं। मरुर्मरुःप्रयोक्तव्यं हिक्का
 ग्नसनिवर्दनं॥ ॥ डाक्काहिगुणठीगुलीमातुलंगरसागत्र। जदिमग्नसकाजघ्नहि
 काहृच्छर्दिनाशनं॥ ॥ इत्रालरुक्कणडाक्कागुलीयथाविचूर्णितं। मधुसंयुक्तं
 लेहग्नसकाजपण्यजि॥ ॥ **हिक्काग्नसाधिकाप्रदजमः॥** ॥ ॥ ४॥ ॥ ४॥ ॥ ४॥ ॥ ४॥
 भादानिग्नधानीकात्रवद्विचूर्णिते। मधुसंयुक्तं पीतलीरास्यनरुद्वय
 पाहति॥ ॥ चव्यामूलवैतसकरुत्रिकनिनितीकं गालीसजीयुक्तं गुगाद
 रुतैःसर्माजैः। चूर्णगुठपुमृदिनं निमृगन्धियुक्तं वैश्वर्यपीनसक
 वायवद्विगुणिकीकानिधौस्वनरेदहनरे॥

५
 १०
 ७
 ०
 ५
 १०
 १५
 २०
 २५
 ३०
 ३५
 ४०
 ४५
 ५०
 ५५
 ६०
 ६५
 ७०
 ७५
 ८०
 ८५
 ९०
 ९५
 १००
 १०५
 ११०
 ११५
 १२०
 १२५
 १३०
 १३५
 १४०
 १४५
 १५०
 १५५
 १६०
 १६५
 १७०
 १७५
 १८०
 १८५
 १९०
 १९५
 २००
 २०५
 २१०
 २१५
 २२०
 २२५
 २३०
 २३५
 २४०
 २४५
 २५०
 २५५
 २६०
 २६५
 २७०
 २७५
 २८०
 २८५
 २९०
 २९५
 ३००
 ३०५
 ३१०
 ३१५
 ३२०
 ३२५
 ३३०
 ३३५
 ३४०
 ३४५
 ३५०
 ३५५
 ३६०
 ३६५
 ३७०
 ३७५
 ३८०
 ३८५
 ३९०
 ३९५
 ४००
 ४०५
 ४१०
 ४१५
 ४२०
 ४२५
 ४३०
 ४३५
 ४४०
 ४४५
 ४५०
 ४५५
 ४६०
 ४६५
 ४७०
 ४७५
 ४८०
 ४८५
 ४९०
 ४९५
 ५००
 ५०५
 ५१०
 ५१५
 ५२०
 ५२५
 ५३०
 ५३५
 ५४०
 ५४५
 ५५०
 ५५५
 ५६०
 ५६५
 ५७०
 ५७५
 ५८०
 ५८५
 ५९०
 ५९५
 ६००
 ६०५
 ६१०
 ६१५
 ६२०
 ६२५
 ६३०
 ६३५
 ६४०
 ६४५
 ६५०
 ६५५
 ६६०
 ६६५
 ६७०
 ६७५
 ६८०
 ६८५
 ६९०
 ६९५
 ७००
 ७०५
 ७१०
 ७१५
 ७२०
 ७२५
 ७३०
 ७३५
 ७४०
 ७४५
 ७५०
 ७५५
 ७६०
 ७६५
 ७७०
 ७७५
 ७८०
 ७८५
 ७९०
 ७९५
 ८००
 ८०५
 ८१०
 ८१५
 ८२०
 ८२५
 ८३०
 ८३५
 ८४०
 ८४५
 ८५०
 ८५५
 ८६०
 ८६५
 ८७०
 ८७५
 ८८०
 ८८५
 ८९०
 ८९५
 ९००
 ९०५
 ९१०
 ९१५
 ९२०
 ९२५
 ९३०
 ९३५
 ९४०
 ९४५
 ९५०
 ९५५
 ९६०
 ९६५
 ९७०
 ९७५
 ९८०
 ९८५
 ९९०
 ९९५
 १०००

॥ **सुवर्णद्विचिकित्साधिकनडादभम** ॥ ॥ **कावय**
 जाजीमनिचंदावृक्षासुदातिमं। श्रीवर्चलगुहोर्दसर्वाशायकनाभनी ॥
 कष्टसावर्चलाजाजीमर्कनामनिचंविठं। धरुलापयकोणीनपिपलीचन्द
 नात्यली। लाधुमजावनीयथा। शुषलसयवागर्ज। अदुदातिमनिय्यास
 जाजीमर्कसयुती। गलमादेकास्त्वेननचत्वारकवठगुहाः। चहुश्राशचका
 न्हल्युर्वागाशुकजसर्वजान् ॥ ॥ **मशचकचिकित्साधिकानुयोदजः** ॥ ॥
 ॥ ॥ **च** ॥ ॥ **पिपलीकोलमर्जानि** कर्णनजीवककथा। लेरुभनप्रदागव्य

॥ **सद्यं** च्छुद्दिनिवानर्त्त ॥ ॥ **मधुना** निविषालेहंमुच्यतेनक च्छुद्दिनां ॥ ॥ **स्वा** इदा
 तिममनिचंमाहीषमवनीलिहं। लाहिर्गच्छयेद्यस्यरुन्नासूपत्रभाषर्ष ॥ ॥
 नक च्छुद्दि ॥ ॥ **रुने** लुकाविठिर्गंचवानिहसहपषथे। पिवेत्प्रागशूलहंच
 कमिच्छुद्दिनिवानर्त्त ॥ ॥ **कमिच्छुद्दि** ॥ ॥ **क** ललाजाभाताहोर्दवमर्नमपिभन
 यं ॥ ॥ **मधुना** लेहयत्यथावमर्नजंगथदिषग ॥ ॥ **दुर्वान** लुलभाथनपीत्वावमि
 पभनय ॥ ॥ **न** लालवंगगजकेहनकोलमर्जालाजापिर्यंरुघेनचन्दनपिपलीन
 । चूनिनिमाहिकजिगानलीठाच्छुद्दिनिहंनिकरुमात्रगपिरुजान् ॥ **न** लादिहं ॥ ॥
 वरुभनमाहाधंदातिमसधकंमधुनापेवकुलुलगेयनेकदिदृक्कानिकनभा ॥

॥ अदिचिकित्साधिकानचवर्द्धनः ॥ ॥ अ॥ ॥ त्रामुजम्वकषायवापिवत्सादिकसंयुगीच
दिसर्वापलुङ्गितिरुक्ता र्वायकषयि ॥ ॥ दाहिर्मजीनकं द्वापिप्लेता नागकं जनीमृदोका
जर्कं नालसुरेष्टा अदितिवात्रही ॥ ॥ उत्पन्नचन्दनलाजाड जीनं कथिनीपिवज्जिनाम
धसमायुक्तं हृष्टानासतमूलमं ॥ ॥ द्वायान्तिनाक्षीनजलीनिरुन्यमसिदकं वाथमधूयकं
वागुर्बन्धनं कलिखनजयन्तु दूयालुनसर्वकं नास्तुहृष्टा ॥ ॥ रुषिभाभाहमायाति
भाहात्यानं विमूर्च्छेति नस्मात्सर्वस्ववस्तुसुनक्वचिद्वानिवायर्ग ॥ ॥ हृष्टाधिकान
पयैदगः ॥ ॥ अ॥ ॥ वासादुनालरुचू र्णेतवतीननलरुथ ॥ जर्कं नासहसं यज्जीम

१. ५. १३५
१. ५. १३५
१. ५. १३५

नाजनभवच ॥ ॥ कालमज्जीनसज्जीनकं जनीनवानिनापीतं मूर्च्छजयत्नीडा
कृष्टुम्वामधुसंयुगी ॥ ॥ उत्पन्नचन्दनलाजाड जीनं कथिनीपिवज्जिनाम
नचुरुमनाजनमूलमं ॥ ॥ उत्पलकालमज्जीनिकं नायनपीषय ॥ जर्कं नामधु
संयुक्तं रुममूर्च्छाज्वनापहं ॥ ॥ सकावगमहामनयः सहावाः जीनापदहावजनानिलो
अ॥ जीनानियानानिचगंधवनि सर्वाधुमूर्च्छास्वनिवानिनानि ॥ ॥ रुममूर्च्छाधिकन
वापदगः ॥ ॥ अ॥ ॥ चवसोवर्द्धलं हि गुणनकं विश्वदीपाकी चूर्णं मर्दुनपाग
व्यं यानाहयनृजपहं ॥ ॥ मर्दुसोवर्द्धलं व्याप्युक्तं किञ्जलानिर्गजीलुमद्याप्र

१. ५. १३५
१. ५. १३५
१. ५. १३५

5

0

5

15

श्या

रुलाविठसे न्धवं कृष्णविठिऊ भूगी कयमानि धा न्यजी वकां घी त्वा म्भु म्भु नाच
 लु वाग्भु म्भु मया यहुं । अयस्मान् न ल्धु साद अलु लु गुरु नी गदा न ग ल्के लु
 ल्यो हा कंचु लु न छ स्या रन थदी यनी ॥ क ल्पा न क च लु ॥ क ल्पा लु क न म स पिये य छ
 द ज ग लु : प च ७ य स्या द क ल्क न ल्या न म य स्या व चि ना न न ॥ क ल्पा लु क च लु ॥ ७ ॥
 ज टि ला पू न ता क जी या व टी क क्क टी व चा । गाय मा ना ज या वी ना चान क क द गी हि नी क
 य स्ता सु क नी च्छ ग सा नि च्छ गाय ल क षा । म हा पू वृ ष द ना च व य स्ता ना क ली द य
 क ठ म्हा ना वृ थि का ली स्ति नां बा द क क म द्यु न । सिद्धं चारु शि का ना द ग हा य स्या न न

३७

३८

10

5

ननी । म हा ये सा चि कं नाम द्यु न भ ग द्यु थ म्भु न । म ध म य व द्धि स्मृ ति क न वा ला नी म ग व द्धि न ॥
 म हा ये सा चि कं द्यु न ॥ ॥ अ य स्मा ना धि का न म क वि न्ग नि ॥ ॥ छ ॥ ॥ अ र्थ ग स्य द न व
 सि र्त्त स्य स्य द वि च न । ति ग्ध म्भु ल व न स्था द वृ ष्ण वा ना म या य हुं ॥ ॥ य र्त्त म्भु ली व ला सिद्ध
 द्धि र्त्त वा ना म या य हुं ॥ ॥ न ग य्वा द व द्धा नो ता ग र्त्त न लु स न्ध वी । अ स्म पि छे : स म को षु ल
 या वा ना वि ना न न ॥ ॥ भु ल्हा पा र्त्त नि म्भु ला नि द व द्धा न स का र्त्त क । पि ष्ठा य् के न द ष्ठा च
 को षु ल वा नि ला य हुं ॥ ल य न ॥ ॥ अ मा स य ग न वा न छु दि ना य य थ न मी द य : ष द न ल
 या ग : स क न र्त्त स्य म्भु ना ॥ ॥ चि क्क क द्यु य वा या व क द्क नि वि षा रु या : म हा या धि प

0

Cms.

5

10

15

20

25

१. ५. ३२८

समतायागः षडनलः स्मृतः ॥ ॥ यक्काऽयगववाचिहिर्नस्त्रुविभचनी। वसुयः ॥
धनीयाऽयपाऽयलवऽयकनाः ॥ काथोवसिगववाचिविधिर्वसिविऽयधनी ॥ यक्का
यवागः ॥ ॥ मोऽयमगुफाके ननुवाद्यालकऽयर्नविधेऽहिर्गुसेन्धवस्यैकं यक्काद्याग
निवानल ॥ ॥ ताहुऽयधिवेत्सर्पिर्मुक्ता कल्यालकं मरु ॥ ॥ हनीनकी वचाऽयस्रासेन्ध
वैसास्त्रवैगसै। दृगमागसमायूकं मयननुकनाऽयनी ॥ ॥ नास्त्रायासुयलैर्वैकैक
यकैयगुगुलाः ॥ सर्पिऽयवठिकां कृत्वा दद्याद्धृद्धसी रुनी ॥ ॥ हिऽयसुवैगसगुली
शोवर्चलसदाहिमं। पिधेद्यागकरुद्धैचकैपहृडाहुनूदिन ॥ ॥ यलमर्द्धयलैवापिनभा

३७
३७

नस्यसुकुटिनं। हिंगुजीनकसिंधूलसावर्चलकद्रविर्य। चूर्णिनमादिकामात्रेन
वचूर्णविस्तारिनी। यथाग्निरुक्तिर्नप्राग्वक्काथानूपा नगै। दिनदिनप्रयो
कव्यंमोसभर्कनिर्नगनी। वागयोगनिहृत्वास्त्रदिर्नवापगानकं। उकाङ्ग
भागिनदद्यात्तुधसर्वाङ्गनाजिन। उन्मूर्ध्निचगृह्णत्याकिमिदोषविलक्षण
। कटीपृष्ठमर्यादन्त्याज्ज० चैविशेषणः॥ नशानपिलि॥ सर्वाङ्गवाग॥ ॥
सहनिदावचाकुष्ठपिपलीविश्वरूपजं। अङ्गुलीवाङ्गमादोययष्टीमध्वकसौध
व। चणानिसमरागमनिहृत्तुचूर्णनिकानय०। उन्मूर्ध्निचगृह्णत्याकिमिदोषविलक्षण

कौरुदयेतनः। अकविंशतिराह हारुवच्छुनिधनानवः भवदुन्दुहिनिधिसामगः के
 किलनिधनी जगुगंगदसूकल्पलहकल्पाहकोरुय॥ कल्पाहकोलह॥ जउवा
 न॥ ॥ अराजास्त्रागुदुर्वीचजगमूलीमहाषधी। जगपूष्या अथगन्ध वरुपषादृद्धदा
 नृका। यमा नीचाजमादाचसमरागमनिका नयगाष्टद्वचूर्नुसिदकृत्वाविगतपद
 मणकी। पिवेन्मान्मनसैर्येषेनयवाक्षोदकेनवा। सपिषावापिलहसुदधिमल्लु
 नवापुनः॥ अस्मि संधिगर्गवार्यस्त्रायमज्जामृगचयगाकटीग्रहगृधसोयैमन्ता
 र्कर्महन्तृद॥ यचकोष्ठगगात्रागमसंस्थसर्वा नृपनाजयगा अरादीना

मचूर्णमृगसर्वव्याधिप्रनाजनः॥ अराहचूर्ण॥ ॥ अराजवगन्धरुपषागुदु
 वीजगोवरीराहुनवृद्धदानृकी। नास्त्राजटीक्षाषवगीयमानी सनागर्गवति
 एभगिचूर्णु। उल्लंभवेत्कोजिकमणमध्यदयंतथासपिषेनमादृरागा। अ
 दार्द्रमावतुतनपुथागम॥ कृत्वानुपानंसूनयाथयूषेः॥ मद्येनवाकाक्षुजल
 नवाथक्षीनेनवामान्मनसंनवापिकाटीग्रहगृधुसिवाहुपृष्ठहनगृहजान
 निपादयमासन्धिरुक्कास्मि गगचवार्गमज्जागगस्त्रायगगचक्षु। ना
 मन्जयद्वागकफान्वेद्वान्। वागनिषान्दुदुह्यानिधषान्। रुग्नास्तिवि

द्वेषस्वर्गवाक्यं यथादृष्टं गंधर्वदक्षिणः ॥ यथादृष्टं मङ्गलं गुणलक्षणं ॥ ॥ ॥
 भावयमानं च व्याप्य चिकित्सकं । त्रिकं ० कावेलां रुयात्रास्त्रादेव वृद्धस्य सुत्राज
 पादुकेनैव मर्मगाली संचितं कृत्वा । द्विगुणं कृत्वा यत्किंचिद्विषयं ह्यनिकानयेत् ॥ अस्ति
 संधिगतं वागं सुनहनीव वदने । गृध्रस्याचामवाचनं च नृसंहयना नकं । सर्ववागवि
 काचनं ज्ञातव्यं यद्विदुः ॥ **गुरुमीदृदिगुणं** ॥ ॥ माषयुक्तं समवायं पच्यं तस्य कजलार
 कापादेषु न संतप्ति नृदीनं दद्याच्चतुर्गुणं । पुष्पैश्च मिलितं स्य कल्कं दत्त्वा कृत्वा मर्मजीवनी
 याति यत्तच्छ्रेयसाय नृणां संधवी । नास्त्रात्मगुणं मध्वं बलायावपि कल्कं । यद्वाद्यानादि

३२

२२

तवागं कल्कं लवणं च दानं । मन्दं शुभं च शुभं च । तिमिरं च विदोषजं । रुक्मः
 कम्पजितः कम्पविष्यं चामववाहुकं । जर्म कल्पापरं च यथा ताह्यजे नव
 सिद्धिः । माषं नैलमिदं लवणं मृदुं जकुगदायकं ॥ **माषं नैलं** ॥ ॥ पुसात्रली जर्म
 लवणं यच्च लवणं लवणं । यादजिह्वं सर्मनं लवणं विदुः चार्त्तकीजिकं । द्विगुणं च य
 यादत्वकल्कादि पालिकाकथा । चिकित्सकं पिपाली मूलं मध्वं संधर्ववचा ॥
 नगयुष्मादि यदार्त्तं नास्त्रावात्र लपिपाली । पुसात्रली ज्यमूलं निमीसी रुक्मान
 कानि च । पच्यं तस्य जिह्वं नैलं वागं च । यामया नृजयं ॥ ॥ श्री गीर्वाण नवनात्री स्तु

नवानागमन्याथाह ॥ कुकुसिमिगुदुर्वृष्टीसीखदुकादिनीहृत्यष्टलिनी
 ग्रीवास्फुक्कैपिनियचुनि ॥ **कुकुपसान्तीनील** ॥ ॥ माषस्याहारिकं चैव तुलाद्व
 दलमूलनः पलानि छागमांसस्य लिङ्गोत्तः मूसः पच्यते ॥ पुनजीनकषायचतुर्लपिड
 वरीविभपुस्तं च निलनेलस्य पथोदद्याच्चर्तुली ॥ आत्मगुका नूककठ्यलगा कालवन्न
 गयी ॥ जीवनीयानिमज्जि छाववाचिगककहली ॥ सव्याषपिप्लीमूलनास्त्रामधकसेन्धव
 देवदानमृगाकृष्टं वाजिनीकावचागडी ॥ नमस्कसमेः कल्केः साधयत्तुमाग्निनापका
 दानादिनीवामन्यास्फुहृहृनृहा कल्कुमन्यानिनः नृगनिमिचविदीषतापलिपा

दलिनीग्रीवारुमलामनूचक्रभाकलायखंजापाकुलागृष्टस्यामववाहुकीपातव
 स्मिगथा ॥ शुक्रनस्य कल्कुदिपूना ॥ नेलमगन्तुनसिनि सर्ववातनृजपहं ॥ छाग
 लादिनेला ॥ ॥ नास्त्रावस्कनविल्वान्तिनिगुसेन्धवलमदुनानाकृष्णपृष्टापच
 त्यर्पिः कुक्षुवागमिनागने ॥ **नास्त्रादिधन** ॥ ॥ **वागवाधाधिकारः द्वाविंशतिः ॥**
 ॥ ॥ ॥ गंधूमचूर्णपयाद्यनसंसागदुष्प्रान्ववीककल्कः ॥ लपाविधयंज
 क्षितसार्पिः सकंपयश्चाविभवजसं ॥ ॥ गिरुलानिचमज्जि छावचाककया
 हि लीवत्यादनीदाननिज्मकषायानवकार्षिकः ॥ वाजुर्कतथा कृष्टं पामातनक

15

३ वं मे ३८२

कमलुर्लक्ष्म कणालिका कर्षपा नादवान कर्षणि। पचैव किं कमाषल कार्यय
 नवकार्षिकः। किं चैव साधिन काथया ग्या मणाय दीयत ॥ **नवकार्षिकः** ॥
वासाधिक ॥ ॥ पिलाल ननु काश्मर्या दाक्षार गवध वन्द नोः। मधु कं द्दीन काकोली
 यकः काथसूती गली। जर्क वामधसंयुक्तं वागन कं पिवेत्तना **पिलाधिक** ॥ ॥ जि
 ग्रुव नलक्ष्म तासु घिष्टे लपकराधिक ॥ **कराधिक** ॥ ॥ जगवनी कल्क गकं नम
 तस्मात्थगुगुला दी ननु न्यचुर्लप कं वागल्लमलिन नालनी ॥ **जगवनी** ॥ ॥ ५१
 यन्न कोणि नय क्था ई नजनी काथ साधिनी। सात्पिष्टेः सजमजिष्टाधीन काको

10

5

७.५.१८१
३.६.३८५

तिवन्दतेः। खड्गकय द्दकमिदं नैलं वातासुना जलनी ॥ **खड्गकय** ॥ ॥ जगनि
 वासजमजिष्टाय दीसि क्तुः पयान्विनी नैलप कं पुथा कं वी पिलुखी वागल्लमलिन ॥
पिलुर्ल ॥ ॥ नमृताया ज्यदिपुस्तु पस्तुभ कं तुगुगुलाः। पुथकं गिरुला पस्तु वर्षा रु
 पस्तुभ वच। सर्वभ कण सैदु द्वाकाथय तल्यल्लमसि। पुनः यचत्पाद जर्षया वत्सा
 नुत्वमागनी। दनी चिनुक मलाती कल्लविन्दुरु लणिकी। गुडुची खग्विउ द्दानी पुथका
 दुपलमनी। विवृता कर्षभ कं तुसर्वभ कण चूर्णु यग। सिद्धे च पदि धरुण ममृता गगुला
 : पलीयथ वदि वलीखाद ममृपिली विजषतः। वागन कं गथा कर्षु गुदजान्यगि सा

0

Cms.

5

10

15

20

25

कनी। इष्टवर्षमहर्षिः। अमवर्गं रुग्णं नीना। द्यावा वातः स्वयं नूतनान् सन्निभान् नयी। अ
 न्निर्वातिर्मिनाः कृषाः अमृता गुग्गुलुः पूनाः॥ अमृता गुग्गुलुः॥ ॥ जलोकादिपुया कवीय
 थः अमृता गुग्गुलुः॥ ॥ वाग्नकाधिकान् विधा विंशतिः॥ ॥ ॥ ॥ विरुला चतुर्क
 टका गुहिकं सधेनालिहं॥ उग्रस्फुटविनाः अयपुनं मूषं तवा विवे॥ ॥ ॥ ॥
 वीसे न्यवादीनां गेलं वापिन त्वेव च। अमृता गुग्गुलुं वापि उग्रस्फुटं रुष्या जय॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ उग्रस्फुटं अधिकान् चतुर्विंशतिः॥ ॥ लघुनी सधेनी निकी दीपनी कटका नि
 या विनचनी स्नेहपानी वस्त्रयदा मसान् ॥ ॥ नास्मा गुग्गुलीभन लुं देवदान् महाष

१ व. ५ १८५ प. ५

ष्टकचन्दना नी। नीला न्यलेला। नितिया र्जुना नी। चत्वा न च विहिता कषायाः पितृपुमह
 मवर्षे पुयका॥ ॥ पितृमह॥ ॥ अग्निमन्त्र कषाय नु वसा भद्रपि वत्तनः॥ ॥ पावलिनीष
 दुस्य लम्बी किं लुक हिं गुकेः॥ कपिन्त नारिषः॥ कर्था रुसि महपुय जय॥ ॥ वाग्नमह॥ ॥
 कटका सनदा र्वा र्वा यल गुयम लम्बी वा। गुग्गुला स्वनसः॥ यथा मधुना सचं भद्रन॥ ॥ ॥
 लम्बी कम्पित्य कर्क नद्रु समपि व॥ ॥ अनी नसन सदे सचं भद्रन॥ ॥ ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥ पिकट विरुला तु ली गुग्गुली च समान्यिकं॥ अमृता नका थसं यकं गुटिका कानयड
 थः पुमहान् वाग्नना गज्यवाग्नना सितमवच। नृपाद्यागं मूषदा र्वा पुमहं चापिता जय॥ ॥

स व

五

गङ्गादिगुटिका॥ ॥ दाडिमस्य च वीजानि किमिष्टस्य च तल्लुला॥ नजनी च विकारुणी
 तागनीतिरुलाकसाधिकस्तकस्य वीजानि यमानो धाताकनथावृद्धास्तयवकोलीचमि
 न्द्रुवसमायुगेः॥ कल्कोनक्षसमाभिमिष्टतपस्त्वविपाचयेत्तारुं॥ अणालपुदानवीसवृक्ष
 पृबगमयाप्यमहात्विजतिष्ठेवमृगाद्यानंतथस्मनी॥ कर्चुसदान्तचवदन्त्यादेत
 त्तज्जलयाविवन्तीनाहृल्लघ्नकामलाह्वननाजतनी॥ दाडिमाद्यद्युर्नानामश्रुतिशीघ्र
 त्रिकीर्तिनी॥ दाडिमाद्यद्युनी॥ ॥ महाधिकानः॥ अयस्तिष्ठता॥ ॥ च॥ ॥ रुलगुर्यंक
 द्गुर्यमर्ललवत्तान्तिनी॥ प्रन्मासावृष्यालतकरुभेकानिलापहं॥ ॥ सचवाजीनी

कं व्यापार्डि गुप्तो वरुणाति च। मस्तु नाज कवः पीतं मधाद्या वद्विदीपनाः॥ ॥ वि
उक्तु ताग नका न काल लोह यजामय। यवामल कच लू व पुयागः स्तुल्य ताजनः॥
॥ ॥ स्तुल्य वि का यः॥ चतुर्दि ॥ ॥ ॥ नक ज्मलिय वामं गज गला श्व
न सति नाः॥ विनं का स्तु यनं ल सं सर्वं पूज ० य पूव ॥ साधय दनि वी जानि सत लो
क न व र्जितं ॥ सवीजं रोग भ क नु दि रागं वि न्वरु वजं ॥ मद्यित्वा जित्वा रव ल्यति स्व फ
ल रसे न दुःख रुधे त्म भूता य कं जीत नाया नु पात ना जी नं ते व पु या ग त्त सूर्य य स्प
वि वि चाना या वद्वि वि चितं वा न्या ना न दु यं त से व नं ॥ ० ॥ गुल्म र मरुता र्ता मुदा

वरुह नैयनी। समधा दुग्ध ना भाग्यं मग्निं च कुन रं रुजी। आयुर्वला वनं दृष्टुमा
 दां दया मरुषर्ज ॥ ॥ जीर्ण विवेचन ॥ ॥ वागाद नीपि वरु कं पिपली लव सान्विर्ग ॥
 ॥ अर्क नासनि चाप रं स्वाइ पि रुद नीपि वं ॥ ॥ यमा नी स न्ध वाजा जी व्याषय कं क
 दाद नी ॥ ॥ साम्द सो व च्च ल स न्ध वा नी हा नैय रा ना मज भाद क चै। स पिप
 ली चि व क र्ग ग व रं हि रु मि उं थं गि स मा नि क र्पा ॥ व गानि चू लु नि च त ह्ना
 तिय ज्जी ग पृ च्च क व लं प स र्क। वा गा द नै गु ल्म म जी र्क रु कं वा य प को पं ग्रु ही
 च द ह्नी। अ जी सि इ ह्ना नि च पा लु या र्ग रु ग न्द ना ल्प गि नि ह नि स द्यः ॥ साम्द ॥

५२

चर्क ॥ ॥ रुपा का च न ह्नी नि रु ला नी लि नी रु ला। राय नी ग्रा हि नी ति का सा ग ला
 वृ गा व चा। स न्ध वं का ल ल व र्ण पि प ली च वि च र्क य ॥ दा डि मं पि रु ला मं ग न र्म म
 र्ग स र्वा द कं। प या यं स च्च गु ल्म पृ ष्ठी रु स च्च य न प च ॥ ॥ ० ॥ हि रु पि क र्क क र्क र्क य व
 हा ग्रा ध म न्ध र्ण। मा रु लं ग त्र सा ध र्ण प्री रु ल्प ला प ॥ क य ॥ ॥ ० ॥ पि प ली चि व कान्
 ल पि रु सा पि वि वा च य ॥ द्य ग्रा च्च रु गु र्ण र्ण ह्नी नै य क र्क र्क हा द ना प ह्नी ॥ ० ॥ द ज म
 ल दान ना ग न च्चि न्न न हा प न रु वा रु या य कं। ऊ य मि ज ला द न ॥ म थ ह्नी प द ग ल
 ग लु वा ग वि का ना न ॥ ० ॥ ॥ रु नी ग की ना ग न द व दान प न रु वा चि न्न न हा क पा यः

५

०

५

वन्धयथा जगत्तुल्योपचयत्तुल्यदद्याद्वाषट्कारं चतुःपत्नी। हृत्कारकं तु वल्कुलं
 पृथक्काष्ठं मधुना हिमं दं जलमलहनी गच्छः। जलधर्मात्तुल्यं सुदृक्कृतं नाना। इति वाचकं गु
 ल्मी जलं माह द्यात्तुल्यं नाम यान्। जलसंकाशं सवागात्तुल्यं पितृवैदिकं जलमन्त्रं गान्। दलम
 लहनी गच्छी॥ ॥ अथ यानदि वास्यं गुर्वादि विनिर्हाजं नः। व्यायामं जानयानं वैजं ० न
 यविवर्जय ॥ ॥ जलधर्मात्तुल्यं नः पितृवैदिकं ॥ ॥ चन्दनी मधु कथं धूमं जीवनी
 लमत्पत्नी। कीर्तिपिष्टः पुदुहस्याद्वाह। जलधर्मात्तुल्यं नः पितृवैदिकं ॥ ॥ पृथक्काष्ठं लकलकलं नमस्कृतं
 गनमलपत्नी। सर्वं पितृवैदिकं कार्यं नकं नकं भाह। वचा सर्षपकलं नपलपाव

५४
 ५४

द्विजं जने॥ ॥ गन्धर्वं केलसंमिष्टं विजलामूलं जं नज। कीर्तिपत्नी गं सफाहानं वृद्धिहनि
 नर्जं जय॥ ॥ ०॥ गेलमनं नु जं पीत्वा वलासिद्धं पथान्वितं। आत्मानं जलं लापचिगात्तुल्यं
 वृद्धिं जयत्तुल्यं नः॥ ॥ नास्त्रायद्वाहं मन्त्रं तु वलासिद्धं नसाधिगं। कात्तुल्यं वृद्धिहनात्तुल्यं
 नवर्गं जयमिलितं॥ ॥ वृद्धिं जयत्तुल्यं नः पितृवैदिकं ॥ ॥ च॥ ॥ अविह
 प्रहाजं मधुमं च कृत्वा नकं सच। पलपत्नी सखाय्या। वल्कुलं लहनी पत्नी। वृद्ध्या।
 ॥ ॥ जं कृत्वा कृत्वा नकं नमीविहं सन्धेवसंयुतं। नमनं हनि गन्धर्वं गलगन्धु नर्जं जय॥
 ॥ गलगन्धु॥ ॥ सर्वं पितृवैदिकं कार्यं नकं नकं भाह। वचा सर्षपकलं नपलपाव

5

0

5

जननावनेः विविधेष्वसुः टपुन धर्मवत्सपुव ॥ निरुल्लेखं ॥ हंसपादीनिचयनं
 जानीष्वगमानसेः नलकलेः प्रथमे लना जीवदविना हली ॥ हंसपादीनेली ॥ ॥ ॥
 दग्धरुगना जीवताधिकानः द्विवत्तालि ॥ ॥ ॥ ॥ यययिष्टगिलनलुसधुक
 कथमूली तल ॥ रुगन्दनपलपायं सनकधदनावति ॥ ॥ विरुलानसस्यकं विजुली
 सिपलपनी ॥ रुगन्दननिहं लाले इष्टवुलहनपनी ॥ ॥ कनवीननिगदगीलाकुलीलव
 तामिहः ॥ मातुलुकाकवत्साकः पथरुले रुगन्दन ॥ ॥ कनवीनानीली ॥ ॥ ॥
 ॥ लवदानरुविडायाः जीवनाहिनसाजन ॥ लाहृगमयनिर्यासरुली ॥ ॥ ॥ ॥

५८
 ५९

हिः सुपिष्टसुली नपदं लपलपय ॥ बलामे नधलो मय्ययर्थदाहचवच ॥ लिपना ॥
 दादिमस्यत्वचं चूर्तुं मयदं लपगलुना ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ पठलनिचगिरुलागुद्वीकाथपिद्वारवादि
 गालनाली सगुमूर्त्तवापिलोरे यतन्वा सर्वोपदं लपहकः प्रयागः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 ललकनने जानीषदिनालतानी सगायकले चूर्तमागुपकं सर्वोपदं लपह नपदिष्टी ॥ ॥ ॥
 म्याष्टदृगी ॥ श्रीगभवधूमानजनी सुवाकित्वं चतकिरिः ॥ लाहृगनेः पथरुले कलु ॥ ॥ ॥
 नजापही ॥
 ॥

5

0

5

रि

नमो बौद्धा कलिं गमय नमो बुद्धाय महाकलाय जयति पति सिद्धा । सर्वेष्वेकैष्वल
प्राप्तं सौख्यं यथा मा विनिहन्ति स दुःखं ॥ **वृद्धमहाकलाय ॥** ॥ शुद्धीनिम्बकिनाम
निकेककलाया भूमिद्वयं शयनी शिरःलास्य कसकं ह का वासा व वाता गुड ॥
मज्जि क्कागि विषादनालममहानिम्बानि पदुक्त का व्याधि ह कृततिरुं रासक द्वा
रुग्गी समुक्ता यत्रोः मज्जी वेव यदा लघु स म न की रथ वनं ॥ माय प्येह भनिवा
किमिह न गमयति का संयताः ॥ गमय र्हेतु महाकलाय स न लभ्यते विवेकः एमानु न
स्माद्वा द जयति ना लमविना न्दुष्टा न ॥ **वृद्धमहाकलाय ॥** ॥ यः खोद

५१
६९

दरुया निष्ठ मनिष्ठा मलकानिवा । सजयत्सर्वक क्का निमासा इदं तसंलयः ॥ पठाल
खदिना निष्ठ शिरःला वासका स गा निका जतः पिवेत्कार्थं कृष्टी कृष्टं वा पाहनि ॥ विठु
शिरःला क कृष्टं लीरुं समादिकं । रुक्तिकृष्टं कि सी न्हा न्ना जे व ह रु ग न्द ना ॥ ॥
निष्ठ कं शिरःला वाय मज्जी का रती व वा स न्धवा नि विषे कृष्टं च ये लाया व न्द कर्ज वि
५७ उ न्ना ज माद के म्भुक्ता न्ना स न दान् वा वा व न्ध ता नि स वा नि ता व त्मा उ कृ ग्गु ली ॥
संद्गु श म पि सा सा डं गुटिकाः का न ये द्विष क । पाद रुजित काल वारु द्ध थ कृ य था व
ली रु न्ध द ल कृष्ट नि कि मिदुष्ट व न्ना नि च । ग्रह द्ध ल्भ वि का र्थे म्भु र्वा म

15

0

5

यगलगुहान्। गृध्रसीमथरुग्मर्कगुल्मं। अपि नित्यं हृदि। व्याधीन्काष्ठगणान्या
 नृजयद्विष्टुमिवासनानां। न कविजिह्विगुल्मः॥ ॥ निम्बं पठालं वाही केगुदू
 रीवासकं तथा। कर्कशं जलपलान् रुग्मन् च कैंकस्य सुकटिगन्। जलदा लविष
 कर्वा यावत्पादावः। श्विर्न। द्युगपसुं पचरुत शिरुला गरुसंयुतं। पचैकिक
 सिद्धय्या न सार्पिः कष्टविना जतं। श्रुतीनि वागजा नागमन् च त्वानि जश्च पेलि
 कान्। विंजलिः श्विषिका ल्यव पानाद वायकषणि। दुष्टवृत्त कि सी नर्तः पच
 का जनिता जय ॥ पचैकिक कर्कशं॥ ॥ न कर्मालं रुविड्ड वा कैंक गवभव

५२
 ६२

चाकनवी र्ववचा कष्टं मासु। ता न कचन्द तं। सालकी सकपलं श्वि मजिष्ठमिड
 वानिक। नृप्रामर्द यलान् रुग्मन् विषम्या पिपली रुवे ॥ चतुर्गुलं हागवाम्भु न
 लपसुं विषाचय ॥ श्वर्गं विस्फोट कि ठिर्म कीर लूगा विचञ्चिका ॥ कलुक च
 विकानां श्वयवृत्त विषदूषिकाः॥ विषने लमिदं नाम्ना संवृत्त विज्मभनी ॥ वि
 षनेली ॥ ॥ सिद्धं चन्दनं मान्सी विठु रुं तजनी द्वयं। पियं गुयद्रकं कष्टं मजिष्ठ
 खदि र्वचयं। जाल्यकं शिवगानि म्व कनकं विषमवच। कृष्णं वक्कला र्वचप
 नाउ र्वं सूरु न ॥ श्वहृपि ह्या निम्वी शि योजय ले लमायया ॥ श्रुती लानं पयं र्नी

यथा। गनवपुस्तक
 नागर्न

5

0

5

0 Cms. 5 10 15 20 25

सिद्धनाथ विद्वत्तस्य मन्त्रायामिदं प्रमाणं

न सर्वकृष्णविनाशनं। यामाविचर्त्तिकाकलुविमर्षादिविनाशनं। न कपिलान्नान्न
रुक्तिनागमनं वीविधान्वदूनां महामिन्द्रनाथं नैली॥ ॥ प्रियलीगुणुल्लेख्य
वलोहस्यपलमवच। पलेश्वस्तनमूलस्य रुत्तातकल्लग्नधाम। मर्सी जुल्लुग्नधाम
कृष्णचलामनिचकलनी। चिग्नकस्यापिचलनी कर्षीर्नचपृथक्पृथक्काचपृथक्
कचिकानासपथीगसिद्धिचतुर्दि॥ कृष्णं ज्ञेयमिदं लीलादीवल्लोचविनिधाजिर्ण।
वृद्धसल्लुचामवागवागनकं गलाष्टिर्ण। उदभयालुर्णो गचकिर्लीगुल्लेख्यकामल
नैवधनरुनागीगः कृष्णदृष्टचिकित्सकः॥ वाक्चीनसायन॥ ॥ कृष्णदृष्ट

३३

६३

सुमभावावायपायागुणमूलकपिष्टकानि। मान्सीजलान्नपसमद्रुवानिस्व
धेदिवाह्यवविवर्जनीया॥ ॥ कृष्णधिकानचतुःचत्वारिंशज॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ यवद्वान्नि कर्कुरुद्वयर्द्धीतपिरुत्त॥ ॥ नास्त्रादात्रयमान्नीचत्रय
गन्धजगवनी। मधुनाल्लेख्य ७ हिं गुणिरुल्लोत्तपिरुत्त॥ ॥ ॥ ॥ ॥
तालपः कक्षपासाविनाशनः। किमिदं रुद्रन ७ वलीतपिरुत्तपदः स्मृतः॥ ॥
सगुर्दीप्यकं यस्तुखादपथान्नरुग्नावः। नस्यनन्धगिसफाहउददः स
वर्द्धिर्जः॥ ॥ अग्निमन्दरुर्वन्तर्लेपिष्टपीठकीसर्पिषा। जीतपिरुत्तपदकी

अ-सकाहादवनाजय ॥ ॥ शुक्लमलकयूषलकोललेननसनवारुडा
 नैसर्वदाकार्येलावतिलिनिजनवा ॥ ॥ गोलान्यननयनानिबुद्धादोषगतिहि
 षकाउशानिवायथाकालीनीनपिहपुयाजय ॥ ॥ ॥ **गोपिहाददको** ॥ ॥ अधिक
 नपकेनत्वानिजा ॥ ॥ ॥ ॥ पठालविष्कामुष्टादिहीकृर्गजलपिव ॥
 पिलकरोचुयतु ॥ ॥ लज्जमात्रचकवादिमान्दुदाहकनसुद्धिनिवानलंका ॥
 ॥ ॥ यवकुष्मापठालानांकाथंशुद्धयनंपिव ॥ ॥ नामयदसुपिलं चमनचिकव
 मिकथा ॥ ॥ पठालगिरुलानिष्टुर्नमध्यर्नपिव ॥ ॥ पिलकलसमद्वनसुद्धिदो

३५
 ६४

सगुलापगनय ॥ ॥ उन्नीनस्वैसःपीनःशपसन्त्यसुपिलकी ॥ ॥ गुठपिपलि
 पथाकि सुल्याकि मोदकःकनः ॥ ॥ पिलकलसामपदप्रोका मन्दमग्नि कदी पय ॥
 गुठाशामोदकः ॥ ॥ जगावनीमूलकलकेद्युनपसुपयःसम ॥ ॥ पथलसुद्धिनिना
 सम्यक्दीनदत्वाचतुर्गुली ॥ ॥ नाजयदसुपिलकी वागपिहादुवान्गदान्ना
 नंकपिलकलसामुच्छासंसीतायमवच ॥ ॥ **जगावनी** ॥ ॥ केनाचलुस्यक्
 उर्वषघलसविषसुथा ॥ ॥ जगावनीनसस्याष्टोपलान्नकोपदापय ॥ ॥ खलुष
 सुसमादायकीनपसुद्धयपथ ॥ ॥ जिजानसुक्थान्नाकेगुणीवासीदिजी

नर्क ॥ अरु पा मल कं चैव चूर्णं दादणमान्तरकं । तद्वर्द्धमविर्चमागं सारं खादिन
 भवच ॥ मधुन सिपुलं चैव पुंके प्यानु प्रयात्र य ॥ हृष्णागव कनो दे सकुर्दिपिमे
 को नागर्न ॥ अग्निर्दीपनं हृद्यं खलु पिप्यली सीहृ के ॥ **खलु पिप्यली ॥** ॥ गुणी
 नां कउ वादे के ह्यु ल म वि लि त्व वं ॥ गगा द्वि कउ वं स प्यिः क्षी न पु स्तु र्य प वं ॥
 खलु पु स्तु स मा पा य ऊ ल पु स्तु र्य ग थ ॥ लं सा व ना नि न द द्या द्वा त्रि क्ष न्या क म स्तु कं
 ॥ अं ऊ जी पि प्य ली वा त्रि न्नी जी र्ण का य वी मि वा ॥ हि म ल म वि च ना र्ग व ल्मा न्स्व र्
 पृ क् पृ क् ॥ प ल उ र्य च म धु ने नी र रु र्ग य त य य ॥ ग गा मा र्ग पु र्य जी र म स्तु पि ल नि

७५
 ६५

लल हृदांगव मर्त वा म वा च वा कं ॥
 वल य ॥ **गुणी खलुः ॥** ॥ लं का धि प स्य रु ज रि डि गु ल व ना ठी नृ क र्द्ध भ व वि
 ष न ग ल पि प्य ली च । क र्ष प मा न म नि र्च स ह वा नि पि ष्टेः गुं रु क भ व व ठि का ख
 लू रु रु मा र्ग । न मा ष धी वि नि रु नि व रु ष्म स का ण मा ष्मा न प्री रु मू द ना म य
 हृ द्यं ना गी । आ मा ण य ष्म ल ग दा म य ष्म ला ता वू धे वृ रु ७ र्ण ख न स पृ थि वा ॥
 वृ रु ७ र्ण ख न स ॥ ॥ **अन्ना पि रु धि का वः ष्म त्वा नि र्ण ७ ॥** ॥ ७ ॥ ॥ वि न क व
 म ना ल य ष्म च ना सु गि वी मा रु लेः । उ पा च न द्य धा र्ष वि स प्या न वि रु हि रिः ॥ ॥
 ॥ प ठा ल पि चू म र्ग यो पि प्य ल्मा स द न न च । वि स प्या व म र्ण न र्ण र्ण ले व न्द य वं स रुः ॥ ॥

15

0

5

॥ गिरुलावससंयर्कं सर्वसिद्धिगया सरु। पया कवी विप्रकार्थं विसर्प्य हननान्
 य॥ ॥ पुषी लुनी कमजिष्ठा पन काशी नवन्दनैः। सयव्या न्दी वनेः पिलु कीन
 पिष्टेः पलपनी॥ ॥ गिरुला पन काशी न समझ कनवी नडा। नलमूलमनका
 वलपः। शुभवि सप्ये हा॥ ॥ जिनीषयष्टी नठ चन्दनला मान्सी रु विडा द्वयक
 पूवालेः। लपाद जंग सद्य नः प्रया हा विसर्प्य कष्ट हनन रु हा नी॥ दण्ड
 गे सप॥ ॥ मूसानिष्ट पहा लानां कार्थं सर्व विसर्प्य ने॥ ॥ दावी मधक मजि
 द्या जनिवा नी नवन्दनैः। नैल नू दारु वे सप्ये नाग जम थ विना जनै॥ दा वी पुनेल॥

५३
 ५५

॥०॥ किनागनिक का निष्टय द्या का म्दया सकी। पठाल पप्यं ठा नी न गिरुला क
 ठान्तिर्न। दाद जंग गण नं न गत्सर्व विस्का ठ ना जनै॥ ॥ पठाल गिरुला निष्टगु
 पूची मूसु चन्दनैः। समूर्वा नाहि ली पा व नजनी सइ नाल रु। कषाय पाय यदन
 ०॥ शुभ विरु ह ना प ह। क लु ल्य न्दो ष वि सु ठ विष वे सप्ये ना जनै॥ ॥ हूनि
 म्दवा सा कठ काय ठाल रु ल गिका चन्दन निम्ब सिद्धः। विसर्प्य दारु ह नवक
 जम विस्का ठ रु व मि नू क षायः॥ ॥ जिनीषी नी न ना जम ह हि मारि लप
 नाद न॥ विसर्प्य विष वि सु ठः पु जम माने न जं मयः॥ च दुः समः॥ ॥ पद्म की

5

0

5

५
 ०
 ७
 कृष्णरुपावजालिष्ठात्मधनाकलुष्माधनं ॥ मुखकलुगर्भ ॥ ॥ निष्ठाद्वयाजीवनिनीषमसु
 केः सलाधरुडालियनागकेभने ॥ सखदविस्मृष्टविसर्पकृष्टदोर्गन्धनामानिहवःप
 इह ॥ लेपन ॥ ॥ जामीललवर्गचमालीसंघेभकेभने ॥ भर्कनामधनालहं अन्वीसु
 ठिकेहिने ॥ ॥ लवंगकर्मनडजीवचदनंनखसनीलीत्यलपदकेभने ॥ अजातिवृक्षः
 गुम्फसुभलात्वचंसवालेनलदंभकेभने ॥ कक्कोलजामीरुलवंसजनासपिपलीना
 गनतुल्यसागा ॥ अष्टाभिनागागयनासपिपुः ॥ द्विपैविनस्यत्यजुसलहाहृष्टालि
 नायननेवाविद्यालोवेभर्पमुद्रुमदाहहता ॥ लवंगमदि ॥ ॥ अष्टाभक्तकसत्वकृष्टु

७
 चूर्णवापंचवस्कलवनातलीरुसमस्याधूलयत्पक्कशठिका ॥ ॥ कृष्णमचन्दनं
 लाक्षाभर्षिष्ठासधयष्टिका ॥ कर्षयमालेनभैरुनेनसाकठवीपये ॥ अजादीनी
 ग्राहिगुटीभनेमद्विनामये ॥ समककूपनीहृन्मुखवर्धयसादनीनीलि
 कायेठकावाभूतस्यभदवनाभये ॥ सप्तत्रयपथागेसरुधैकायेनसन्नि
 रं ॥ कुंकुमाद्युर्गेली ॥ ॥ रुजनसंयदागर्भनकल्लाधयष्टिकी ॥ पालीकाकाक
 माचीचगायनिनललीयकी ॥ वासुकीभृगपूषाचवासापृषीपठालकी ॥ अकालि
 अविदाहानिर्मगनिवठकानिवातिलगेलचुनससुवाठिकोरुसुसंयुग्म ॥ ॥ म

ॐ गानधूमकट्टककैवाकाशयवानीषवित्सर्गगागासमाचुल्लुकताविलया
 कलावृषागंययधुगलालवैव्यकोभद्रविपीनसावोसन्धाकलवृद्धिकरुन
 नालीकलानिलुनाप्रवर्तचपूरु॥ कलानिचूर्नु॥ ॥ ऊनीपगामृगाडाकापोभदावीरु
 लक्षिकैः॥ काथः॥ दुयनः॥ जीगागलुषामरवयोकनू॥ ॥ यंचवल्ककषायावाणि
 रुलाकाधचववा॥ मूरवपाकपूसदुः॥ पुयाक्रामवधवन॥ ॥ यदोलगुन्नीमिरु
 लविगलगायनिकिकाद्विनिमसुगानी॥ पीककषायामधूनानिदुकिमूरवस्थित ॥
 ग्यस्यगगातलषान्॥ ॥ रवदिनस्यउलोसमकुजलडालविपाचय॥ जषादरु

गवसेवपवामकेषदायय॥ जागीकर्पूत्रधुमानिककोलैकदुलातिच॥ कलषीगु
 लिकाकायामूरवयोगायवर्द्धनी॥ दकोरुमूरवनागषुजिह्वागालीमयेषच॥ मूल्य
 खनिनवदिका॥ ॥ दनमूरवनागषिकात्रयचै॥ ॥ ॥ ॥ कपिन्धमाउ
 लंगमसृगंगवयवसेः॥ सुहे॥ मूरवादे॥ दूनयकलुक्कलुज्जलायनानुय॥ ॥
 गोवमूलानुनकलुसजयकुयवादिनि॥ दनमूरवकिपल्कापूमेधवनावचुकि
 नी॥ ॥ स्वजिकामूलकमुपहिदुक्कषामसोयध॥ मयपुष्याचतसैलपकैशुकेच
 उगुर्नी॥ पुनादपूतवाधियजीवन्नापुवाधारुति॥ मजिह्वागैली॥ ॥ गालयुक
 लाकेकोमिषामुजमूयपुष्यासाधितै॥ पनिकल्लयदंतलगागयकुनमनवा॥ यदुयानि

३६८

वैक

यप्रतिस्वयं पावसि मिश्रतनु०॥ नमस्तुतुतुतुतु॥ ॥ नामार्थागाधिका नद्विपंचाल
 ७॥ ॥ ७॥ ॥ लंघनो लपनाश्च दलिताना विध्ववित्रचनेः उघचा प्रद रिष्यंदा
 मंजनाश्च रुतादिहिः॥ ॥ दावीनसां जनम्यापि सुतयुक्तं पुनर्न। निरुक्ति
 लीघु दाहाभु धदनाः स्यन्दन रुवा॥ ॥ वृहत्तनलु मूलत्वक् सि यामूलं
 ससंन्धर्व। अजाही नलपिष्टं स्या० वर्हिर्वनादि नागनु० वाग॥ ॥ प्रपीलु
 नीकयक्का हू निजमल कपन्नकः। जीम मधु समायुक्तः सकः पिरुद्धि नाग
 नू० पि० ॥ ॥ निम्यपण कर्तुं चूर्तुं लाधुर्तु विमिश्रितं। वस्तु वद्वज्जलं किं पीपून

73

लनशनागनु०॥ ७॥ ॥ मिश्रितं निरु लायष्टी जर्क नारुदमस्क केः। पिष्टं जीगाम्ब
 नाशको जकारि ष्यंदा नागनं॥ ७॥ ॥ लाधुयष्टी जिनो दाही नार्क जेलम
 ऊपयश दाही वामधुना काथः सवोरिष्यन्द पुनर्न॥ पिदाष॥ ॥ आटनूषारुया
 निम्यधारी मस्क सुकलकः जकभुर्वकरं रुनि चकुष्यं वासवादि किं॥ वासादि॥
 नूपाक॥ ॥ गायमधुकसाना - वीजं चादुससंन्धर्व। मधुनी जनथाहमः स्यः च
 त्वानलु कनागनं॥ गुडु गुक॥ ॥ चन्दनं गनि किं लाहा मालनी कलिकाचिर्न।
 वल्लुकरु नीवर्हिः। जामि तस्य प्रमदनी॥ वल्लुगुक॥ ॥ सन्धर्व वाजि पादं च ग

73

प्राचनसमायुक्तं। ललत्त्वप्रसस्यकं पुनर्वातकायहं॥ जजका॥ ॥ कृष्णगण॥ ॥
 पिलीगगनमूर्त्तिं दुःखं तस्यैव जय॥ अपक्वपटले रुन्ध्रात्पक्वं च पयि॥ अधः॥ ॥ पृष्ठ
 ला कर्षेण विधि॥ ॥ जित्तार्थे न्येव काजी संजयथा न सजनी। सक्षुद्रः काचलु कामनि
 मिनद्यी नलकिया॥ काच॥ ॥ न सजनी नु निड्डमालनी निचय ह्न वा॥ ॥ लसकृदु सस्य
 काचरी नान्धना लनी॥ न काच॥ ॥ न सजनी न द्युगदगली सस्य लुगानिकैः॥ गो
 सकृत्सस्यकं पिहा पदुन दृष्टय॥ दृष्टीगत॥ ॥ न कृत्ता मधुसंयुक्तं फेरु तसा गय सम १५
 वः॥ अजनी नान्धना न्धनं न क जाजिका॥ लुक्कगण॥ ॥ पर्वनी पिउ कासन्धिरा गदि

त्यादमं नयं। अशुवाप्यधिक चिन्ने श्मनमधुसंन्येः॥ सन्धिगण॥ ॥ हविगाली वचा
 दान् सनसान सधे पिर्ण। अरुयाव सधिष्टना न पित्र विना जन॥ वत्समिह गण॥ ॥
 निगाद्यिह लादावी जित्तमधुसमन्धिर्ण। अरिद्यागादि लुधुना नीदी न नपुनर्ण॥ नयना
 रिद्यान॥ ॥ गिरुला कृष्णमंदाका मधु कंकट आदिनी। सधो लुनी कं सुक्ष्म ला विउगना
 गकं ननी॥ नीलात्पले नानि वद चन्दनं नजनी द्यय। कार्षिकेः पयसा तुल्ये गि गु
 लं उरु लोस॥ द्युगदगली पर्वे दतत्सर्वं न नृजा पदं। निमिनी रिधा पमु अर्वकामला
 काचमेव दं॥ विसर्पे पदं कर्तुं न क्वपथु मवचा खालि र्यपालि र्वेव कं ननी प

तर्नतथा॥विषमजनममोनिगुर्कचागुवपातकि।अन्यचवहवाभागानउरुयववम
 गा॥गानसवीनागयत्यागुसात्कनेसिमिनीयथानचेवास्मात्पनीकिचिद्विपिकिःका
 पादिहिः॥दृष्टिप्रसादनदृष्टयथासाहेरुलंघन॥तिरुलाघुनी॥ ॥रुद्रनाजनेसपुर्ण
 यशमधूपलनचालेलस्यकउचंपकसद्यादृष्टिप्रसादये॥नस्थादलियलितघ्नीमा
 सनेतन्नसंगयः॥हमनाजघनेल॥ ॥धनुनागविकानविपिवाग॥ ॥४॥
 पंचमूलीगृपदीनेनसदाकचिनागदि॥ ॥कृष्मनलुमूलयेलेपाकोजि
 कथपिनी।जिनाहिनीलयत्यागुपक्ष्यामयूकन्दज॥ ॥कृष्णदगुलीम

१३

धेकगनाहात्यलवालकःजलपिष्टःजिनालपःसद्यःगूलनिवानलः॥ ॥
 देवदाननगकुष्टनलदेविगुरुषज।लपःकांजिकसंपिष्टःनेलयकःशि
 नाहिनी॥ ॥नकजपिरुसध्वेनाजनालेपःअवर्न॥ ॥गुप्तामानागनमि
 लण्यनस्यन्दनगल्लना॥नाजयकिरिधध्यानाजिनाहिःसंपुलेपना॥
 ॥ननलुमूलनगनीलनाहाजीवकिसासरसेचवैवाहृंगंविउंजमधूप
 ष्टिकाचविजाषधकुबुतिलसनेल।आजपयसुलविमिगिगनुवउ
 गुरुलेहृंगनसुविपर्क।पदिन्दयीनासिकयाविधेमःजीर्णतिरुन्यु

15

0

5

जिनभावि का जाना। च्युतांशु कंठान्तरि गीष्म दान्द दृष्टं सुलीम्ब दृष्टं कभी
 नि। सपै लुहृष्टि एति मंच वरु वीक्षा वली चाप्यधिक ददाति ॥ पाद दग्धं ॥
 ॥ दृष्टं दृष्टं माता च कर्तुं वीरु नाति विधिः। पाने न स्य च न साप्यः स्या दान
 घुमध्वः ॥ १० ॥ दृष्टं ॥ ॥ किमिज्ज धाषन का क सिग्ग वी ऊं ग्या ता वनी ॥
 ऊमूय यनं तस्य किमिज्ज किमिज्ज त्परं ॥ किमिज्ज ॥ ॥ महाषध सस्व न्मं वच
 पिपल्लिहिः कृती नृवपी ग्रापथा क र्यं सूर्या व वृत्ति सुदनी ॥ सूर्या व ॥ ॥
 जनिवा त्पलय स्या क कुट्टे लपा न्न संयुगे ॥ घृण प नादि स वा स सूर्या वली

१५

दृष्टं दृष्टं ॥ ११ ॥ ॥ ननवनी कृष्ण किला मधु कं नील मूत्य ली। पूर्वपन लुवाचा
 पिलर्प नाध व चानथ ॥ १२ ॥ ॥ वागान्जु दिहिः कुट्टः जिनः क म्प म्दिन
 य ॥ १३ ॥ ॥ नृगाम वला न्ना स हा स हा ति ग न्ध के ॥ ॥ निभो गो म्पिका वः बहुपंच
 ज ॥ ॥ ॥ ॥ दध्ना सी व चला ऊ जी म धु कं नील मूत्य ली। पि व लो द य नं ना नी व
 न्मृ ग्द न पी ति गा ॥ वान नृ ग्द न ॥ ॥ अ ज्म क व ल्क ल धा थ नृ ग्द न्ध स जी ग ल
 य थ व ल मि व ल्पा न स्की नी नृ ग्द ल ना न न ॥ पि ल नृ ग्द न ॥ ॥ म धु कं शिरु ला ली
 धु म्स्स सो ना धि का म धु। म धी नि म्च गु पू चा नु क रू जी नृ ग्द नं पि ध ॥ क रू नृ

गदरा ॥ रुलजिकी दानवचास वासासा निष्ठ दृष्टी कलनी सानि ही ॥ द्वाविर्न काय
 सुलीतमेषां स कर्म के धेय मष्ट गद नै उ ॥ विधोषा ॥ गद न ॥ ॥ पदन रुनिवत्ताम्
 ले इग्धनमधु संपिबे ॥ नक पुदय ॥ ॥ जनावनी न सपुस्तु द्वाद्रयित्वा वपी उय ॥
 घृणपुस्तु समायुक्ती की री द्वि गुलि गीरि प्रक ॥ ननः कल्का निमान्द द्यान्सु लो इम्ब
 नसमिगाना जीवनीयानि यान्दो यष्टि चन्दन पद्म को ॥ श्व ईष्ट या तम गुफा च व
 लाना गुवला तथा ॥ जलपत्नी पृष्ठपत्नी विदानी जल विवाह यी ॥ जर्क ना ॥ य समादिया ॥ ११
 को ज्ञायो ॥ रुलानि वा समा किं द नु वि लय न द्युर्न मव गान थ ॥ नक पिरु वि का

नषु वागपि कुरु भूवा वागन की द्युय का ज ॥ संहि का सु इ सु न ॥ श्री गदा हं लि ना दा
 हं नक पिरु समुद्र वी ॥ असु गद न सर्व रु वं मृग कुरु व दान नी ॥ एता नो गम न्म मय नि
 हास्त वसि मि नय था ॥ वृह छ गावनी द्युर्न ॥ ॥ पुदन ॥ ॥ कदली ती र्प ले एक वारी
 रुल न स मधु ॥ जर्क ना सहि गे पय सा मधु न न मूत म ॥ ॥ शो म योग ॥ ॥ जल कंद वर व ई न
 मधु कंद वि दानि का ॥ जर्क ना मधु सयुक्ती मृग गी सा न ना ज न ॥ मृग गी सा न ॥ ॥ वयोप
 कंचि का जा जी कुरु वृष क से धवे ॥ श्रु भादा यव क वं चि र्क जर्क ना न्दि नी पि क्षु प्र म न
 या लो श्र वा द ग ल्य न रु डी नी ॥ यानि ॥ यर्क हं हं ग गुन्सा ज्म वि नि व रु य ॥ ॥ पि सा ला

मनिधमार्थः जगद्व कृष्टमन्धर्यः वहि उल्लापदनिभा धार्याथानिविष्णवेनी ॥
 सहावनद्विहिरुला गुपूची सपूनर्तुवा। शुक्तासाहविड्डना स्राभदानतावनी। कल्की
 कृष्टधृतपुस्तं पवत्कीनवकुञ्जलीतसिद्धं पाययतावीथानि गूलनिपीठिका। पिष्टितावलितायावनि
 :सुताहृदिताजयाः। पितृथानि प्रविशान्ता वल्लथानि शुभ्यासृता। ययर्द्धकृताः स्तान्गर्भगृहकक्रिया
 सकृ०। नतस्तु धूर्तनामथानि क्षापरुनं पनी। रुतधृत॥ ॥ यानि गूल॥ ॥ विस्फुटकनसः पी
 ना मस्तुता च समन्विताः। यानिकन्दनिहृत्ता शुनना ठानी च धूपनी॥ यानि स्कन्दे ॥ १८
 ॥ पदनाः सासना गमुर्गनी सानः यानि गूल यानिकन्दाधिकाम्पं वपं या ग० ॥ ॥ ॥

वगभङ्गं द्यायु निसेकार्यवदना नृगन नविशयः गतयथायासो न लवयन् ॥ नृधनम् ॥
 माकुलं गयामुलानि सध्वकं सध्वर्षं यमी। दृग्ननसहपागव्यं शुखं नानीष गूयग ॥
 मूलकुसालपनी स्या० मुपि हृत्तुलाम्कता। नाकिवसि रुग्मलोपा० शुखं नानीष गूयग ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ रुर्जगुर्गुलध्वनयान्ती शुभ्याः पुधूपनी। अमना पागनी पाकं सद्य गूलनि
 वालैर्ता ॥ अमना पागन ॥ ॥ सुतायाहृदि भावसि गूलमकूल संधि की यवकान्ति
 वरुणमस्तुता धूपकं नवा ॥ ॥ पिप्पल्यादि गतनाथपि वं दु नवत्तमन्विता ॥ ॥ पिप्प
 ली पिप्पली मूलं च द्युष्टा यवानिका। जीनकं दृहविड्ड विहं सौवर्चलं तथा ॥ नतेन
 वाषष्ठेः पिष्टेनानां विवाचय ॥ ॥ आमदारं रुनं वृष्यं करु धृवं द्वितीयं ॥ का

मानपौसि धुं बालनी सर्वनागन ॥ विप्यली मनिवाना कुच लुं समधन के पी वमन माउ
 ल सस्य हि का चू दिनाननी ॥ नागनाति विषासु सु बाल के नु देवो गृता क मान पा वयं न्या
 सवती माननागन ॥ ॥ लाजा मयसी मधु के न कौ ड भवचा न लु ला द क सैयू के कि
 यं हनि यवा हि की ॥ समै गत्यन किं रुक्क सं पिष्ट न पुना नूना मस्या उ मधु सैयू के न का
 ती माननागन ॥ ॥ सनिच महाषध कूट जं दि गुली कुं मूरु या ल नै कमलः गुठ न कय
 गमन ॥ ग्रह सी भागं निरु न्या गु ॥ ॥ अथ स्व त्व गद ल की ड मूरु पा के पल पय ॥ ॥ ८१
 पुष्कनाति विषासु गी मागधी धन्यास के ॥ ननु लुं मधु नाली रं नि नू नी पंच का गन ॥

॥ दाति मय वकी जानि जान के नाग के नमो च लुं तं न के ना कौ ड ला रं ह प्र वि ना गन ॥ ॥
 तु गम च कु ड सैयू के का ज्ञ अ सरु नी ज्ञ ज्ञ ॥ ॥ अथ यथा ज न च लुं नि नू नी गु
 द पा क नू ॥ ॥ गाल पा के यव दान मधु नापति सावर्त्त ॥ एक सादु नाल रु डा रु
 क के ग का ठ गा रु या चूर्तिता मधु सयि स्नान राह नि जिज्ञा जे दा न का ज्ञा म सुत
 म के न न जा पि न य दू ति ॥ ॥ मनः जिना अं ख ना रुः पि य न्या ध न सा ऊ नी वलि की
 ड ल सैयू के बाल सैयू के न न ॥ ॥ सनिच न वनी गरी ॥ अथ चरु रु द य चि
 गु ॥ ॥ क ल म प ल सि न की ड सु दू ला सैयू के क नः मूरु गु र प्या क यः नि नू नी

लरुडरुमः॥ ॥ गुरुधूमनिः॥ कृष्णजिकेन्द्रयवेः॥ लिः॥ लपसुक लरुन्या
 मुसिधपासाविचिचिकोः॥ ॥ चन्दनपर्वटमसुनुगडाहासजीनकी। कठिरु
 यासमहाग लरुयत्तमेनासहं। पुलापष्ठासहि क्काचहृदादाहाभुमानजी। मृ
 र्छाहृदिपिदाषरविषहृनरुनीः॥ ॥ वालचन्दनादिः॥ गोलीसविजयाग्रीगीपि
 प्यलीमइनालसा। गुक्तालात्वचयप्रं चविठिगवव्यज्ञनकं। मूक्तवाप्तीगधीगीक
 केगनगुठिकानिच॥ ॥ नतानिसमरुगानि। कृचुअनिकानये॥ ॥ मधुपाकमिदधा
 केवालनारुठकाननी। ॥ ॥ सकासाग्निमाईचकिमि॥ ॥ रुद्रगवई। यसायनकनपथकी

७२

लनरुसर्वहनं। रुषजागीपनिक्ताला लरुपाकमिदिसमृती॥ मधुमादक॥ ॥ ववाक
 रथावकीमिदार्थकमथापिचाग्निवासेत्थर्वचैवपिप्यलीधृतनरुम॥ मधुधृतमिद
 सिद्धयातवाचदिनादिनाहुरसृतिः। पुमपाः। कमानावृद्धिमान्कवा॥ नृपिगावाननकीमि
 नरुगनयमातना॥ पुमवन्निकुमानागीपिवतामसुमरुली॥ नरुमडलधुनं॥ ॥ लाकान
 सममीसिद्धतेलपसुचउज्जुलीनासाचन्दनरुहृदवाजिगन्धनिगम्ये॥ ॥ नतुक्रदान
 यथाहृदवर्तिकरुहनेपुः॥ वालनांदननकाधुमसहाहलवर्तुह॥ लाकानिदं॥ ॥
 सप्यविलगुनसुवकसपनासिधुपत्रवा॥ विजलसविठिनाममय॥ ॥ ववामधु॥ ॥ थप
 रमुरुक्रमापुवोनातिरुद्रकान्कालिगीकापिहृगोयनलेपायेथथद्यनमेगी॥ ॥

धूपः सर्वज्ञानधायमः शेषग्रहनाशनं ॥ ॥ बालप्रागधिकान्नान्नकपयैः ॥ ॥
 ॥ ५॥ ॥ नञ्नीसं न्वर्क्षोर्दं संयुक्तं घृणमुत्तमं । पानैर्मूलविषाहं स्यादि न्ववि
 दस्यथयुतं ॥ ॥ गृहधूमहविदेहसमूलैर्गुलीयकैः । अपिवाणुकिनादह
 ः पिबेद्विघृणयुतं ॥ ॥ स्वनसंनवमूलैश्च सुविर्तैः सिन्धुनिर्जैः संनवमनिच
 तुल्यानि सवौक्तसमीकर्तुं । मधुसपिथैर्गुहनि विषं स्थावनर्तुं गमं ॥ ॥ जूपाभाजैः स
 वौक्तनिमिनीषस्यत अंबवः । शुद्धकाकमाचवगवा मूत्रलपयैः ॥ सपिथैर्गुहसंसि
 द्धं विषं संसप्तपनी । जमूतैर्नाम विख्यातमपि संजीयत सुतं ॥ जमूतं घृतं ॥ ॥

५३

कर्पूराकं पथाज्ञानिमज्जैः सविधानलेः । सामाटस्वनससुलैः सिद्धं त्रुटावुत्तमं परं ॥ कर्पूरा
 दिनेला ॥ ॥ लूयविष ॥ ॥ निमीषस्यवमूलैश्च सुविर्तैः सिन्धुनिर्जैः संनवमनिच
 तुल्यानि सवौक्तसमीकर्तुं । मधुसपिथैर्गुहनि विषं स्थावनर्तुं गमं ॥ ॥ जूपाभाजैः स
 वौक्तनिमिनीषस्यत अंबवः । शुद्धकाकमाचवगवा मूत्रलपयैः ॥ सपिथैर्गुहसंसि
 द्धं विषं संसप्तपनी । जमूतैर्नाम विख्यातमपि संजीयत सुतं ॥ जमूतं घृतं ॥ ॥

मिसपि। कल्का कृतपर्वसर्वि। यथा दत्ता च वृजनी। सम्यक् कृत्वा वृजनी च वृजनी मन्त्रवि
 निरूपे ॥ सविष्टु यतिवत् ॥ इति कृतपर्वसर्वि ॥ विधानिहानि सर्वानि ज्ञान
 मयवनानि वा। कर्त्तुं मानि च यथा वा। न गन्धोषतानि वा ॥ स्य मन्त्रे देवविष्णुहनि गन्धोषहता
 लजा। यमज्जु नु मकं कलुमा नु मादं विसं हृती ॥ नाग्यमं यजना स्य गयानवमिषु री
 जना। सय्यकोठकलुदाकि ईशनी विषनृत्यनी मृत्पुपाग्नपहना मद्युतमंत्युकीलि
 तं ॥ मृत्पुपाग्नपहं धृती ॥ ॥ गन ॥ ॥ दिवास्वप्ने च वायं च व्यापमं कुधमातपी। स्
 नागिन के नु शुद्धं पितु विषाग्नः ॥ विषयापवसं प्रकाशसायुषाश्च संस्कृताः ॥ श्रुति

१५

विकारः ॥

माहानिवा नानि विषाग्नौ यथोजय ॥ विष्णो ॥ ॥ विष्यन्ता न स मंसि द्वै सर्व गगहर्षधृती
 कालीयकहनिडा स्यो का मला मरु नृत्यनी ॥ ॥ गुडुची न स कल्का र्थी वातयक विकार
 नृ ॥ ॥ स्वदिनानि सृष्टि सृष्टि शिष्टकृष्ट विमये नृ ॥ ॥ मृदिका न स कल्का र्थी
 यक पिष्टे न नाक कृ ॥ ॥ यिष्यत्यादि दृग्यक ॥ ॥ राजनादी सुसंरुके शुष्ठी नाद्र
 रुथान्ति र्गः ॥ कल्के नु स रुग्नि र्थं नानाद ॥ ॥ मरुवर्जली ॥ ॥ मरुदकयवह
 नपीत्वा च नो शुवा निष्ठा ॥ नानाद ॥ ॥ मरुवा लव्वं वा निदोषवापाहनि ॥ वसायन ॥
 ॥ ॥ कृष्णा तु कात्यलजगं सन्धिनी निष्कलीकृती ॥ यस्तु च दृगं लस्य गसिन्धु

कनिष्ठापयः त्वत्सर्वध्यानी के व्यापजीन कलह्यातकी। पद्म नु च वासार्गगणि
 चाली ज्ञानेन के। जूटाठ व क म यो स प ल स च काल म म की। चली कु र्ग प ली
 ज्ञानेन गु ठ म्प नु ल या प च ता जी गी रु न य ल न्प श्च म ध नाः म्प क ल्प य ज
 क र्ग पि कानि ल रु न म न्द न्नि नी च दी प नी। कृ ज्ञ म नी व रु स। अ र्ध वा डी क न र्ग
 म रु मी। प म दा स प ज कानि य चा स्यः दी स न ग मः। दू र्ध न च ग ही ना नी प न
 म ग दि स गि र्ग मी। का स ज्ज स रु न हि क्का रु नि क्क हि म न्ना च की। गु ठ क व्पा लु की
 कानि सा वि र्गी म म्प दा कु र्ग ॥ गु ठ क व्पा लु क ॥ ॥ तज्ज क न स ॥ ॥ वि स वा र्ग

६१

कननादि वा नाष्ट प चै ज्ञ ॥ ॥ ॥ ॥ स म्प १ १ ३ ३ रु द प द गु क्क र स म वा ना ॥

६५ पत्र ६

नेपाली भाषा १ ५३ साल

मनेको पोसाका

संवत् २०११ साल मा नेपाली संवत् १०३५
 संवत् १६८६ साल मा वनेको नेपाली संवत् १५३
 ३२२

संवत् १५३ भाद्र पक्ष शुक्ल दशमी मवार

15

10

5

0

पुनः प्राप्तिना हरेण मे कृतं विदुः सदा नमस्कृत्य तस्मै नमः
पुनः प्राप्तिना हरेण मे कृतं विदुः सदा नमस्कृत्य तस्मै नमः
२ त्रिको अ नै य वा २ वा २



Cms.

5

10

15

20

25

